जयन्तु वीतरागा :
श्री आत्म-वल्लभ-समुद्र - इन्द्रसद्गुरुभ्यो नम :

परमारक्षत्रियोद्धारक, चारित्र-चूड़ामणि
आचार्य श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी महाराज

का

संक्षिप्त

जीवन-परिचय

सालपुरा से लुधियाना तक

(वि० सं० १९८०-२०४६)

प्रेरणा
पंन्यास श्रीजगच्चन्द्रविजयजी
लेखक
श्री अवधनारायणधर द्विवेदी
विमोचन
श्री अभय ओसवाल

श्री वल्लभ सार्वजनिक ट्रस्ट, बड़ौदा

दो शब्द

आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी महाराज से मेरा परिचय, बम्बई चातुर्मास में हुआ। जैन मुनियों के आचार-विचार, त्याग-तपस्या, पदयात्रा, अहिंसा के सूक्ष्मतम सिद्धांतों का पालन, विश्व के किसी अन्य धर्म में नहीं है। चरम तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी तथा अन्य पूर्ववर्ती तीर्थंकरों में मुझे वे सभी लक्षण मिले जिनका प्रवचन भगवान् श्रीकृष्ण ने वीतरागों, स्थितप्रज्ञों, गुणातीतों और भगवद् भक्तों के संदर्भ में 'गीता' के कई अध्यायों में किया है। वर्तमान जैनाचार्य तीर्थंकरों के प्रतिनिधि माने जाते हैं। अतः उनका जीवन जनता के लिए आदर्श होता है।

आचार्य श्री का सान्निध्य बम्बई के अतिरिक्त थाणे, पुणे और सर्वाधिक अकोला और हस्तिनापुर तथा लुधियाना में मुझे प्राप्त हुआ, जहां उनके चातुर्मास हुए थे। अतः आचार्य श्री की त्याग-तपस्या, स्वभाव और चारित्र आदि सद्गुणों को बहुत नजदीक से देखने का अवसर मिला और उनसे अत्यधिक प्रभावित हुआ।

अकोला में आचार्य श्री विजय वल्लभ सूरि और आचार्य श्री समुद्र सूरि के गुजराती जीवनचरितों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्य श्री के प्रमुख शिष्य पंन्यास श्री जगच्चन्द्र विजय ने यह इच्छा व्यक्त की कि वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य श्री का जीवनचरित प्रकाशित कराना चाहता हूँ। तदनुसार इस कार्य के लिए मैंने अपनी सेवा अर्पित की।

'बोडेली तीर्थ दर्शन', 'इन्द्र-प्रभा' तथा पूर्वाचार्यों के जीवनचरितों से आचार्य श्री के जीवन की प्रारम्भिक घटनाओं को लिखने में किंचित् सहायता मिली है, जिनके लेखकों का मैं कृतज्ञ हूँ।

पाश्चात्य जगत् में डायरी लिखने की एक अच्छी प्रथा है जिसका अनुकरण भारतीय संत-महात्मा तथा राजनेताओं ने किया है। महात्मा गांधी की डायरी प्रसिद्ध है। अन्य डायरियां भी प्रकाशित हुई हैं। आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरि वर्षों से नियमित रूप से डायरी लिखते हैं, जो इस जीवनचरित का प्रमुख आधार है।

आचार्य श्री का विस्तृत जीवन लिखा जा चुका है जिसकी प्रेस कापी टंकित हो रही है। इस बीच आचार्य श्री का सड़सठवां जन्म दिवस लुधियाना में मनाने का कार्यक्रम बनाया गया। इसलिए पंन्यास श्री जगच्चन्द्र विजय जी के सत्परामर्श से यह पुस्तिका तैयार की गई है जिसका विमोचन आचार्य श्री के जन्म दिवस पर ओसवाल एग्रो मिल के अध्यक्ष श्री अभय कुमार ओसवाल ने किया है।

जीवनचरित लिखने में पंन्यास श्री जगच्चन्द्र विजय जी से प्रेरणा और जानकारी मिली उसके लिए हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

यदि इस जीवन-चरित से पाठक धार्मिक प्रेरणा ग्रहण कर सकेंगे तो मैं अपना श्रम सफल समझूँगा। इसमें जो त्रुटि रह गई हो उसकी सूचना मिलने पर सुधार के आश्वासन के साथ अग्रिम धन्यवाद।

– अ० ना० धर द्विवेदी

" हमारी जितनी और जैसी पात्रता होगी, उतना ही हम पा सकते है। नदी से घड़ा भरे, बाल्टी भरे अथवा लोटा भरे नदी का कुछ नहीं घटता। जिसके पास जैसा पात्र होगा वह उतना ही भरेगा। देवगुरु, धर्म की आपार कृपा प्राप्त करने के लिए अपने जीवन में पात्रता का विकास करना चाहिए। सुपात्र से ही पात्रता मिल सकती है। "

विजय इन्द्र दिन्न सूरि

प्रेरक :

पन्यास श्री जगच्चन्द्र विजय जी

सौजन्य

श्री अभय ओसवाल

चेयरमैन

ओसवाल एग्रो मिल्स लि.

बिन्दल एग्रो मिल्स लि.

ओसवाल एग्रो फयुरन लि.

जीवन-परिचय

जन्म और बाल्यकाल

बड़ौदा (गुजरात) से पूर्व दिशा में लगभग सत्तर किलोमीटर दूर 'बोडेली' के आस पास परमार क्षत्रियों के सैकड़ों गांव बसे हुए हैं, उनमें से एक गांव है सालपुरा।

सालपुरा में रणछोड़भाई नाम के एक सद्गृहस्थ किसान रहते थे। उनकी पत्नी श्रीमती 'बालूबेन' पति के ही अनुरूप सरल स्वभाव एवं धार्मिक भावना से ओत-प्रोत भारतीय महिला थीं। रणछोड़भाई के अनुज सीताभाई सुप्रसिद्ध कीर्तनकार थे। उन्हें बोडेली के सुश्रावक सोमचन्द भाई का सत्संग प्राप्त था, जिससे जैन धर्म के आचार-विचार सीताभाई के रोम-रोम में बस गए थे। कहने की आवश्यकता नहीं, कि सीताभाई की धार्मिक भावना का प्रभाव उनके पूरे परिवार पर पड़ा था। रणछोड़भाई सीताभाई के समान धर्म प्रचारक तो नहीं थे, पर उन्होंने सीताभाई को पूरी छूट दे रखी थी, कि वे अपना धर्म प्रचार बढ़ाते रहें।

इसमें दो मत नहीं हो सकते, कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में धार्मिक भावना शीघ्र विकसित होती है। सीताभाई के सदाचार और धर्माचरण का प्रभाव श्रीमती बालूबेन पर विशेष रूप से पड़ा। अशिक्षित होते हुए भी वे भगवान् से यही प्रार्थना करतीं, कि मुझे धर्मात्मा पुत्र प्राप्त हो। क्योंकि भारतीय संस्कृति में वही स्त्री पुत्रवती मानी जाती है, जिसका पुत्र धर्मात्मा हो।

आखिर भगवान् ने 'बालूबेन' की प्रार्थना सुन ली। वि० संवत् १९८० में कार्तिक कृष्ण नवमी को उन्होंने एक शिशु को जन्म दिया। प्रायः प्रत्येक प्राणी को पुत्र-प्राप्ति से बेहद खुशी होती है। परन्तु बालूबेन की खुशी और ही प्रकार की थी। उनके मन में यह विश्वास घर कर गया था कि भगवान् ने मेरी प्रार्थना सुन कर मनोकामना पूरी की है। अतः मेरा यह लाल अवश्य भगवान् का भक्त होगा और इसके पुण्य प्रताप से हम लोगों को भी सद्गति प्राप्त होगी।

बालूबेन और रणछोड़भाई इस नवजात शिशु के सौन्दर्य पर इतने मुग्ध हो गए कि सारा काम-धाम छोड़कर उसकी हंसी, किलकारी और रूप माधुरी

अपलक निहारते रहते थे। इसीलिए सबके मन को मोहने वाले इस शिशु का छोटा और प्यारा-सा नाम रखा गया—मोहन—सांवरे सलोने कुंवर कन्हैया के नाम पर।

मोहन या बाल मोहन सचमुच मोहन था। आबाल-वृद्ध सबके मन को मोहने वाला। मोहन जब घुटनों के बल सरकने लगा, तो अपनी तोतली बोली से लोगों का मन और भी मोहने लगा। अपनी बाल-क्रीड़ाओं द्वारा सबको प्रमुदित करने लगा। सचमुच रणछोड़भाई और बालूबेन का मोहन गांव-घर, पास-पड़ौस सबका मोहन बन गया।

मोहन का बड़ा भाई अदैसिंह तो उसे कभी छोड़ता ही नहीं था। जब देखो तब पीठ पर लादे फिरा करता और क्यों नहीं ऐसा करता, जब कि गांव के बच्चे मोहन का पिंड नहीं छोड़ते तो अदैसिंह तो उसका अपना सहोदर बड़ा भाई था।

सरस्वती के द्वार पर

'पूत के पांव पालने में' कहावत को मोहन ने शैशव के पूर्व ही चरितार्थ कर दिया। होनहार बिरवान के होत चीकने पात के अनुसार बालक मोहन की प्रतिभा का आभास लोगों को अब मिलने लगा। वह जो सुन लेता, याद हो जाता। जो देख लेता, उसे पहचान लेता।

उन दिनों सालपुरा में कोई स्कूल नहीं था। इसलिए पास के गांव डूमा—की प्राइमरी पाठशाला में मोहन का नाम लिखाया गया। इसी स्कूल में प्रारम्भिक शिक्षा पूरी हुई। माता-पिता के संस्कार तथा सीताभाई के सामीप्य से बालक मोहन पर जो धार्मिक छाप पड़ी, वह अब और भी गहरी तथा सुदृढ़ होने लगी। चाचा सीताभाई की गोद में बैठा-बैठा मोहन उनसे धार्मिक बाल-सुलभ जिज्ञासाएं प्रकट कर उन्हें चकित कर देता। सीताभाई को लगा कि यह सामान्य बालक नहीं है। इसमें किसी दिव्य आत्मा का निवास है।

बालक मोहन अब दस साल का हो गया। आस पास कोई मिडिल स्कूल नहीं था। और, मोहन के मन में धार्मिक जिज्ञासाएं इस कदर बढ़ रही थीं कि उसके लिए स्कूली शिक्षा का कोई विशेष महत्त्व नहीं था। उसकी इतनी ही उपयोगिता थी, कि उससे धार्मिक शिक्षा की समझ पैदा हो सके। उस समय बालक मोहन के सामने 'सा विद्या या विमुक्तये' का कोई ऊँचा आदर्श भी नहीं था। फिर भी सीताभाई के सत्संग से उसे यह ज्ञात हो चुका था कि

जीवन का चरम उद्देश्य परम तत्त्व की प्राप्ति है। अतः धार्मिक गुरु की तलाश में मोहन का मन इधर उधर दौड़ने लगा।

उन दिनों 'डभोई' में आचार्य श्री विजय सिद्धि सूरि के शिष्य पंन्यास श्री रंगविजय जी स्थविर के रूप में विराजमान थे। उनके मन में परमार क्षत्रियों की अभ्युन्नति की विशेष भावना थी। धार्मिक जिज्ञासु उनके पास आया करते थे और वे उन्हें जैन धर्म के सिद्धांत और संयमपूर्ण जीवन जीने का उपदेश दिया करते थे। जिज्ञासु मोहन को उनके विषय में जानकारी मिली। वह सालपुरा से लगभग बाईस कि० मी० दूर डभोई की ओर चल पड़ा और पंन्यास श्री रंगविजय जी की सेवा में उपस्थित हो गया। सीताभाई के पश्चात् पंन्यास जी ही ऐसे गुरु मिले, जिन्होंने मोहन की धार्मिक शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया।

माता-पिता का वियोग

गुरुवर श्री रंग विजय जी की छत्रछाया में बालक मोहन धार्मिक शिक्षा प्राप्त कर रहा था। इसी बीच उसकी मां बीमार पड़ गई। दवा होने लगी। पर हालत यह थी कि ज्यों ज्यों दवा दी जाती--मर्ज बढ़ता ही जाता। अन्त में एक दिन बालूबेन प्यारे मोहन को सदा-सदा के लिए छोड़कर दिव्यलोक सिधार गई। इसके पश्चात् मोहन प्रायः उदास रहने लगा। वह एकान्त में रोता रहता। वस्तुतः बच्चों के लिए मातृ-वियोग पितृ-वियोग से अधिक कष्टदायक होता है। फिर भी मोहन के इस आघात पर उसकी धार्मिक शिक्षा ने मरहम का काम किया। वह एकदम अधीर नहीं हुआ। उसने अपनी पढ़ाई चालू रखी।

किन्तु संकट आते हैं, तो चारों ओर से आते हैं। मां के देहावसान का घाव अभी भर नहीं पाया था, कि छह महीने बीतते बीतते पिता श्री भी परलोक के पथिक बन गये।

बालक मोहन के कोमल हृदय पर यह दूसरा बड़ा आघात लगा। क्या परमात्मा इतना क्रूर है कि उसे ऐसे बालकों पर विपत्ति ढाने में आनन्द मिलता है या वह अपने भक्तों को दुःख ताप में तपा कर कंचन बनाना चाहता है या उसे संसार की अनित्यता और क्षणभंगुरता का सक्रिय पाठ पढ़ाता है। मनीषियों का तो यह कहना है कि ईश्वर जो कुछ करता है, अच्छा करता है। ऐसे दुःखद कार्यों में भी उसका कोई न कोई मंगलमय विधान छिपा रहता है। परन्तु अल्पज्ञ और स्वार्थलिप्त मानव उसे देख नहीं पाता। इसीलिए विपत्ति पड़ने पर वह परमात्मा को कोसने लगता है।

बालक मोहन पर माता-पिता के विछोह का जितना भी दुःख हुआ हो, पर इससे वह अधिक चिन्तनशील बन गया। उसने इन घटनाओं से संसार की क्षणभंगुरता और अनित्यता का प्रत्यक्ष अनुभव किया। शाश्वत जीवन के उपदेश तो उसे रंगविजय जी से मिले ही थे, धार्मिक शिक्षा में उसका मन रम गया था। उसने अब तक पंच प्रतिक्रमण, चार प्रकरण और तीन भाष्य कंठस्थ कर लिए थे। कंठस्थ ही नहीं उन्हें हृदयंगम भी कर लिया था।

यों तो माता-पिता के न रहने पर चाचा सीताभाई और अग्रज अदैसिंह के रहते मोहन को जीवन-यापन सम्बन्धी कोई कठिनाई नहीं हुई, फिर भी उसके मन में इन घटनाओं तथा पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण वैराग्य भाव दृढ़ होने लगा।

सीताभाई के मन में भी अनुज के चले जाने पर उदासी छाई रहती थी। अतः परिवार के कुछ लोगों के साथ वे मोहन को लेकर पंन्यास श्री रंगविजय जी के पास दीक्षा लेने के लिए पहुँचे। किन्तु परिवार के वे लोग भी पीछे हो लिए थे, जो दीक्षा लेने के विरोधी थे। उनका कहना था कि परिवार के इतने लोग एक साथ दीक्षा लेंगे, तो सारी गृहस्थी चौपट हो जायेगी। ऐसी परिस्थिति में श्री रंगविजय जी ने निर्णय सुनाया कि जिस दीक्षा को लेकर परिवार में कलह शुरू हो गया हो, वह दीक्षा नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त पंन्यास जी स्थविर थे विहार नहीं करते थे। दीक्षा के पश्चात् शिष्य को लेकर विहार करना आवश्यक है। इसी लिए दीक्षा देने में उनकी रुचि नहीं थी।

पंन्यास जी के इन विचारों को सुन कर सब ने दीक्षा लेने का विचार मन से त्याग दिया, किन्तु मोहन के मन में वैराग्य के कारण यह विचार उठा कि परिवार की असहमति के बावजूद मैं दीक्षा क्यों न ले लूँ। परन्तु पंन्यास जी की आज्ञा का उल्लंघन उससे न हो सका। उसने यह सोचकर संतोष की सांस ली कि भगवान् महावीर स्वामी ने गर्भवास में दीक्षा लेने का संकल्प किया था, परन्तु अट्ठाईस वर्षों तक माता-पिता के जीते जी वे दीक्षा नहीं ले सके। उसके बाद भी दो वर्षों तक बड़े भाई के आग्रह पर दीक्षा स्थगित कर दी थी। इसलिए मेरे लिए दीक्षा कुछ दिनों के लिए स्थगित कर देना कोई चिन्ता की बात नहीं है।

दैव-दुर्विपाक से संवत् १९९३ में पंन्यास श्री रंगविजय जी ने कालधर्म प्राप्त किया। यह मोहन पर तीसरा आघात था। पंन्यास जी यद्यपि दिव्यलोक

चले गये, परन्तु 'बोडेली' में परमार क्षत्रिय जैन छात्रों के लिए आश्रम की स्थापना हो चुकी थी। इसलिए मोहन बोडेली आश्रम चला आया, जो सालपुरा से केवल ४ कि० मी० है। बोडेली छात्रावास में एक बड़ी सुविधा यह है कि यहां के छात्र धार्मिक शिक्षा के साथ साथ स्कूल और कालेज में व्यावहारिक शिक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं। मोहन भी इसी सुविधा का लाभ उठाने लगा। उसने धार्मिक शिक्षा के साथ मिडिल तक स्कूली शिक्षा भी प्राप्त कर ली।

जब किशोर मोहन ने सोलह पार कर सत्रहवें वर्ष में प्रवेश किया, तब सांसारिक परम्परा के अनुसार उसके विवाह की चर्चा होने लगी। क्योंकि उन दिनों बाल विवाह की प्रथा जोरों पर थी। दुधमुंहे बच्चों का ही नहीं, गर्भस्थ बालकों के विवाह का भी वाग्दान हो जाता था। ऐसी परिस्थिति में सत्रह वर्षों तक किसी किशोर का अविवाहित रह जाना बड़े आश्चर्य की बात थी।

इसलिए किशोर मोहन के विवाह की बात जोरों से चलने लगी और बिना उससे पूछे विवाह तय कर लिया गया। उन दिनों विवाह के बारे में लड़कों से कोई पूछता भी नहीं था। बड़ों के सम्मान का ध्यान रख कर मोहन ने विवाह का स्पष्ट विरोध नहीं किया और उसका विवाह सम्पन्न कर लिया गया। किन्तु मोहन को इस विवाह बन्धन से प्रसन्नता नहीं हुई और हो भी कैसे सकती थी, राग और विराग का परस्पर विरोध जो है। हां, विवाह के प्रति जो आकर्षण होता है, वह समाप्त हो गया।

मुक्ति की ओर

विवाह के बाद मोहन प्रायः उदास रहने लगा। सीताभाई इसका कारण जानते थे। वे सोचने लगे—मोहन जैसा युवक अधिक दिनों तक विवाह बन्धन में नहीं रह सकेगा।

मोहन सीताभाई को गुरु और पिता के समान मानता था। उसने एक दिन चिन्ता भरे स्वरों में सीताभाई से कहा--कहां तो हम दीक्षा के लिए पंन्यास जी के पास गए थे। पर अब उसके विपरीत माया जाल में और भी अधिक फंस गए हैं। इस जाल का फंदा आगे और भी कसता जाएगा। इससे निकलने का कोई रास्ता नहीं दिखाई पड़ता।

"क्यों दुखी और उदास होते हो मोहन, भगवान् की इच्छा समझ कर इस परिस्थिति को स्वीकार करो। संसार तो इसी तरह चलता रहेगा। हां, संसारी

होकर भगवान् को भूल जाना अवश्य चिन्ता की बात है। ऐसी बात तो है नहीं हम उस समय लोगों का पुण्योदय नहीं हुआ था जिससे दीक्षा की इच्छा पूरी नहीं हुई। मैं तो नदी के किनारे का पेड़ हूँ, अब गिरूं, तब गिरूं। पर तुम्हारा तो अभी सारा जीवन पड़ा है। भगवान् चाहेंगे और पूर्व जन्मों के पुण्य उदय होंगे, तो तुम्हें दीक्षा लेने का सौभाग्य प्राप्त हो सकेगा। रात बीतने के बाद सूर्योदय होता ही है।"

सीताभाई के इन वचनों से मोहन को कुछ सांत्वना तो अवश्य मिली, परन्तु शान्ति बहुत दूर थी। वह एकान्त में सोचता—मेरे जीवन की सबसे दुःखद घटना विवाह है। हाय, मेरी कायरता ने उसका विरोध क्यों नहीं किया। ऐसे उदाहरण मिलते हैं, कि ज्ञानोदय होने पर सजे-सजाए विवाह मंडप से लोग भाग जाते हैं। भगवान् नेमिनाथ ने भी तो ऐसा ही किया था। मेरी अक्ल मारी गई थी, जो ऐसा नहीं किया। अब पछताने से क्या होगा। शास्त्रकार कहते हैं, मोह माया और दुनियादारी का मुख्य द्वार विवाह है। इसमें प्रवेश कर बाहर निकलना बड़ा मुश्किल होता है। क्योंकि उसके बाद सन्तान, सुख-सुविधा, राग-द्वेष, अहंकार आदि के एक-एक कर माया के अनेक द्वार खुलने लगते है। पर ये सारे बन्धन मिथ्या हैं। मृगतृष्णा हैं। वास्तविक सुख-शान्ति तो भगवान् के चरणों में स्वयं को समर्पित कर देने में है। अतः इस सांसारिक जाल को काटना होगा। माता-पिता ने तो स्वर्गवासी बन कर मेरी मुक्ति का पथ पहले ही प्रशस्त कर दिया है। चाचा सीताभाई का आशीर्वाद तो है ही। बड़े भाई अदैसिंह हैं, उनकी बात भी रह गई है, उनके कहने से विवाह जो कर लिया। अब दीक्षा लेने में मेरे सामने कोई बड़ी बाधा नहीं है। जो बन्धन हैं, उन्हें दृढ़ता से तोड़ना होगा। जितना ही विलम्ब होगा, मुक्ति का द्वार उतना ही दूर होता जाएगा।

इस प्रकार के चिन्तन, मनन और हृदय मंथन में मोहन के वैवाहिक जीवन के आठ महीने देखते-देखते बीत गए। एक दिन आधी रात को कोई महात्मा स्वप्न में कह रहे हैं — 'वत्स मोहन, कब तक सोते रहोगे। क्या तुझे ऊषा का आलोक प्रिय नहीं है।' इस संबोधन से मोहन की नींद उचट गई। उसे स्वप्न का आशय स्पष्ट हुआ। सांसारिक जीवन-अज्ञानांधकार की गहरी नींद तो है ही जिसमें मैं अब तक सोया पड़ा हूँ और ऊषा का आलोक-ज्ञान का प्रकाश-मुक्ति का आलोक !

मोहन ने दृढ़तापूर्वक निश्चय किया— 'अब लौं नसानी, अब न नसैहौं'। इस सोच विचार में दो घंटे और बीत गए। वह घर से बाहर निकला। इधर उधर नजर डाली। कोई आ तो नहीं रहा है। कहीं भैया अदैसिंह तो नहीं हैं। आने दो। रोकेंगे। कह दूँगा — भैया अब तक रुका रहा, अब नहीं रुकूँगा। मुझे सुखी और प्रसन्न देखना चाहते हो, तो मेरी मंगलमयी प्रकाश यात्रा की सफलता के लिए हार्दिक आशीर्वाद दो। इसी में आपका बड़प्पन है। पर वहां कोई नहीं था। सब भ्रम था। दो तीन बजे कौन जागता है। सारा गांव गहरी नींद में सो रहा था। इस समय जगा था केवल मोहन—'तस्यां जागर्ति संयमी।' इसके पश्चात् उसकी दृष्टि पूर्वाकाश की ओर उठी, जहां ऊषा मुस्करा रही थी। मानो कह रही हो — बेटा मोहन, मेरे आने से पहले ही तेरा हृदय प्रकाश से भर गया। आओ — आलोक के राज्य में प्रवेश करो। अंधकार अब नहीं ठहर सकेगा। प्रकाश का पावन पथ प्रशस्त है। तुम्हारा स्वागत!

जब दीक्षा का मुहूर्त आया

सोमचन्द भाई के अवसान के पश्चात् बोडेली के आस-पास के क्षेत्रों में धार्मिक वातावरण शिथिल पड़ गया। उससे अहमदाबाद के धर्मात्मा जवेरी मोहन लाल मगन लाल को बड़ा आघात लगा। उन्होंने उस क्षेत्र में धार्मिक भावना जगाने के लिए मास्टर जीवन लाल को भेजा, जो एक अच्छे धर्म प्रचारक सिद्ध हुए। उन्होंने लोगों की धार्मिक भावना को विशेष बल प्रदान किया। वे स्वयं धार्मिक भावना में ऐसे रच-पच गए कि संयमपूर्ण मुनिव्रत में दीक्षित हो गए। अब वे साहित्य प्रेमी मुनि श्री विनय विजय के नाम से ख्यात हुए।

दीक्षा लेने के पहले से ही लोग धर्म-प्रचारक के रूप में मुनि विनय विजय जी को भली भांति जानते-पहचानते थे। इसलिए घर से निकलने के बाद नवयुवक मोहन उन्हीं की शरण में पहुँचा, और उनसे स्वयं दीक्षित होने के लिए विनम्र प्रार्थना की। इस प्रतिभाशाली और धर्म प्राण नवयुवक को मुनि श्री जानते थे, इसलिए उन्होंने दीक्षा देने के लिए तत्काल स्वीकृति दे दी, जिससे मोहन भाई को अपूर्व आनन्द हुआ। क्यों न हो। निराशा में आशा हर्ष पैदा करती है। पंन्यास श्री रंगविजय जी तथा डभोई के श्रावकों ने जहाँ मोहन को दीक्षा देने में असहमति व्यक्त की थी, वहाँ मुनि श्री विनय विजय ने दीक्षार्थ

स्वीकृति प्रदान कर उसे निराशा की लहर में बहने से उबार लिया। तदनुसार दीक्षा का मुहूर्त और स्थान निश्चित हुआ। फाल्गुन शुक्ल पंचमी संवत् १९९८, नरसंडा गांव जिला खेड़ा, गुजरात।

निश्चित तिथि और स्थान पर दीक्षा की तैयारी प्रारम्भ हुई। दीक्षा स्थली नरसंडा गांव को भली-भाँति सजाया गया था। तोरण वन्दनवारों और पताकाओं की छवि देखते ही बनती थी। विधिकारों के मन्त्रोच्चार और वाद्यों की झंकार से सारा मंडप गूंज उठा और जब विधि के अनुसार मोहनभाई को राजसी वस्त्रालंकारों से सजाया गया, तो वे सचमुच राजकुमार लग रहे थे। क्यों न राजकुमार लगें। एक तो परमार क्षत्रिय कुमार और दूसरे कुश्ती और व्यायाम से सुगठित बलिष्ठ शरीर। सोने में सुगन्ध, किन्तु जब मुंडन हुआ, तो सारा राजसी माहौल श्रमण संस्कृति में परिवर्तित हो गया। यहाँ तक कि मोहन भाई को पहचानना भी कठिन हो गया।

दीक्षा संस्कार के बाद रूप-रंग और वेश-भूषा ही नहीं बदलती, नाम परिवर्तन भी होता है। तदनुसार मोहन भाई का नाम रखा गया — मुनि श्री इन्द्र विजय।

अब मुनि इन्द्र विजय मुनि श्री विनय विजय जी के साथ रहने लगे और धार्मिक अध्ययन में जुट गये। उनका प्रथम चातुर्मास संवत् १९९९ में मुनि श्री विनय विजय जी के सान्निध्य में ढूँढोर गांव गुजरात में हुआ। कुछ महीनों के बाद संवत् १९९९ में मुनि श्री इन्द्र विजय की बड़ी दीक्षा बिजोवा (राजस्थान) में हुई। दीक्षा देने वाले थे — महेन्द्र पंचांग के रचयिता आचार्य श्री विकास चन्द्र सूरि।

इस प्रकार परमार क्षत्रियों में सर्व प्रथम जैन मुनि होने का गौरव मुनि श्री इन्द्र विजय जी ने प्राप्त किया।

मुनि श्री इन्द्र विजय जी ने संवत् २००० का दूसरा चातुर्मास पालनपुर, गुजरात में पूरा किया।

संवत् २००१ का तीसरा चातुर्मास लखतर (सौराष्ट्र) में हुआ। संवत् २००२ का चौथा चातुर्मास राजकोट (गुजरात) और संवत् २००३ का पांचवां चातुर्मास सुप्रसिद्ध जैन तीर्थ पालिताना में सम्पन्न हुआ।

पालिताना के धार्मिक वातावरण का मुनि इन्द्र विजय जी पर बहुत अच्छा

प्रभाव पड़ा। यह उनकी पहली तीर्थ यात्रा थी। यहीं पर उनकी भेंट वयोवृद्ध मुनि श्री जिनभद्र जी से हुई , जो वृद्धावस्था के बावजूद बोडेली के आस पास परमार क्षत्रियों के सैकड़ों गांवों में बड़ी लगन से सेवा कर रहे थे। वार्तालाप के बीच मुनि जिनभद्र जी ने मुनि इन्द्र विजय जी से कहा — यदि आप जैसा सहायक मुझे मिल जाता, तो बोडेली में हमारा सेवा-कार्य बहुत सरल हो जाता। मुनि इन्द्र विजय जी ने निवेदन किया कि उस क्षेत्र में सेवा करने की मेरी भी इच्छा है। पर अभी हमारा अध्ययन चल रहा है। उसके बाद आप की सेवा में उपस्थित हो सकता।

मुनि इन्द्र विजय जी का संवत् २००४ का छठा चातुर्मास बड़नगर (गुजरात) में पूरा हुआ। इसके पश्चात् मुनि श्रेष्ठ श्री विनय विजय जी गुजरात की सीमा पार कर राजस्थान स्थित पिंडवाड़ा पहुँचे। उन्हीं के साथ मुनि इन्द्र विजय जी का संवत् २००५ का सातवां चातुर्मास पिंडवाड़ा में सम्पन्न हुआ। अब तक मुनि इन्द्रविजय के सभी चातुर्मास मुनि श्रेष्ठ श्री विनय विजय जी की निश्रा में सम्पन्न हुए।

ज्ञान-पिपासा और बढ़ी

मुनि श्री इन्द्रविजय जी ने अपना अधिकांश समय अब तक धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने में व्यतीत किया था। अब अन्य विद्या-विधाओं की ओर उनका ध्यान गया। उनकी ज्ञान-पिपासा उत्तरोत्तर बढ़ती गई। सौभाग्य से उन्हें एक से एक अच्छे मार्गदर्शक और आचार्य सुलभ होते रहे। किन्तु उन्हें तो शिक्षा की आखिरी मंजिल तक पहुँचना था।

परमेश्वर की कृपा से वह मंजिल उस समय प्राप्त हुई, जब उन्होंने संवत् २००५ में युग पुरुष, पंजाब केसरी, कलिकाल कल्पतरु आचार्य विजय वल्लभ सूरीश्वर जी महाराज की छत्रछाया प्राप्त की। उन्हीं के साथ आपने सादड़ी में अपना संवत् २००६ का आठवां चातुर्मास सम्पन्न किया। आचार्य श्री के सान्निध्य में मुनि इन्द्र विजय जी ने संस्कृत काव्य, व्याकरण, न्याय, दर्शन आदि का अध्ययन किया। संस्कृत व्याकरण का अध्ययन पहले सर रामकृष्ण भंडारकर कृत प्रथम और द्वितीय भाग संस्कृत के माध्यम से किया, तदनन्तर पाणिनीय व्याकरण का अध्ययन लघु सिद्धान्त कौमुदी द्वारा पूरा किया।

मुनि श्री इन्द्र विजय जी का नवां चातुर्मास संवत् २००७ में पालनपुर (गुजरात) में सम्पन्न हुआ। वहाँ आचार्य विजय वल्लभ सूरि और आचार्य श्री समुद्र सूरि की निश्रा आप को प्राप्त थी। इस चातुर्मास में मुनि श्री इन्द्र विजय जी ने आधेकाधिक विद्योपार्जन किया। इसके अतिरिक्त आपने पंन्यास श्री समुद्र सूरि जी से गुरुभक्ति का अनुपम आदर्श भी ग्रहण किया।

आचार्य विजय वल्लभ सूरि जी के सान्निध्य में मुनि श्री इन्द्र विजय जी ने अनेक विद्या-विधाओं के साथ अन्य भारतीय धर्म शास्त्रों का अध्ययन भी पूरा किया।

थोड़े ही समय में मुनि इन्द्र विजयजी की विद्वत्ता, कर्मठता और गुरु सेवा की ख्याति सर्वत्र फैल गई। इसलिए संवत् २००७ में जब आचार्य विजय वल्लभ सूरि फालना (राजस्थान) में आयोजित श्री जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेन्स में पधारे, तब बोडेली के धर्म प्रचारक मुनि श्री जिनभद्र जी ने उनके पास श्री जेठाभाई के हाथों एक पत्र इस आशय का भेजा कि यहां परमार क्षत्रियों के उद्धार के लिए एक संस्था स्थापित की गई है। इस क्षेत्र में धर्म प्रचार की बहुत अधिक आवश्यकता और सम्भावना है। मैंने वृद्धावस्था में इस कार्य का उत्तरदायित्व स्वीकार किया है, जिसकी सफलता के लिये आप मंगल आशीर्वाद दीजिए जिससे हमें प्रेरणा मिलती रहे। विशेषकर आपकी सेवा में मुनि श्री इन्द्र विजय जी हैं। वे इसी क्षेत्र के निवासी हैं। वे पालिताना में मुझ से मिले थे। यहाँ कार्य करने की उनकी भी इच्छा है। वे यहाँ के धर्म प्रचार को बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न कर सकते हैं। उनका सहयोग हमारे लिए बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा।

इस पत्र के उत्तर में युगवीर आचार्य श्री ने लिखा — आपकी भावना बड़ी उत्तम है। यह कार्य करने योग्य है। मुनि इन्द्र विजय जी संस्कृत व्याकरण, काव्य और न्याय का अध्ययन कर रहे हैं। उसे पूरा कर लेने पर आपके पास धर्म प्रचार के लिए अवश्य आयेंगे।

आचार्य विजय वल्लभ सूरि जैसे समयदर्शी, सदाचारी, विद्वान् महामानव गुरु के सान्निध्य में रह कर मुनि श्री इन्द्र विजय जी प्रतिदिन अपनी विद्या, शिक्षा और धर्म भावना विकसित करने लगे। इससे उनका पुस्तकीय ज्ञान तो बढ़ा ही, उनके आचारों, विचारों, आदर्शों और कार्यों पर आचार्य श्री विजय वल्लभ सूरि का अमिट प्रभाव पड़ा। अब मुनि इन्द्र विजय जी के सभी चातुर्मास आचार्य देव की निश्रा में होने लगे।

मुनि इन्द्र विजय जी का संवत् २००८ का दसवां चातुर्मास पालिताना में हुआ, जहाँ पर्युषण तथा अन्य धार्मिक पर्व बड़ी सफलता से सम्पन्न हुए।

पालिताना से विहार कर मुनि इन्द्र विजय जी गुरुदेवों के साथ बम्बई की ओर चल पड़े। उनके लिए तो यह प्रथम अनुभव था। इतना लम्बा विहार-पालिताना से बम्बई तक इससे पहले कभी नहीं किया था। इस विहार में पश्चिम भारत के पूरे दर्शन हुए। स्थान-स्थान की नैसर्गिक शोभा, हरी-भरी खेती, बाग-बगीचे आकर्षण के मुख्य केन्द्र थे। मुनियों को पदयात्रा से शारीरिक कष्ट तो होता ही है, सर्दी-गर्मी के अतिरिक्त ऊबड़-खाबड़ पगडंडियों से उन्हें गुजरना पड़ता है। पर इससे कष्ट-सहिष्णुता का लाभ मिलता है, इसमें सन्देह नहीं।

अनेक नगरों, उपनगरों को देखते, अनुभव करते मुनि इन्द्र विजय जी जब पहली बार बम्बई पहुँचे तो उन्हें ऐसा लगा कि वे किसी दूसरे लोक में आ गये हैं। बम्बई की विशाल गगन-चुम्बी अट्टालिकाएँ, लम्बी-चौड़ी सड़कों पर चलते-दौड़ते वाहन, जिनके कारण पद-यात्रियों को सड़क पार करना कठिन हो जाता है, उन्हें जहाँ विस्मय-विमुग्ध कर रहे थे, वहाँ शान्ति भंग के कारण भी बन रहे थे।

आचार्य विजय वल्लभ सूरि का संवत् २००९ का चातुर्मास पायधुनी के प्रसिद्ध उपाश्रय गोडी जी में निश्चित हुआ। उनके शिष्य-प्रशिष्य बम्बई में चातुर्मास करेंगे, इसका कार्यक्रम भी बन गया। मुनि इन्द्र विजय जी, आचार्य श्री की सेवा में तो उपस्थित रहते ही— उपाध्याय समुद्र विजय जी तथा अन्य वरिष्ठ मुनियों की सुख-सुविधा का ध्यान रखते। इसीलिए वे सभी मुनिवरों के स्नेह-भाजन बन गये।

इस प्रकार मुनि इन्द्र विजय जी का संवत् २००९ का ग्यारहवाँ चातुर्मास गोडी जी (पायधुनी, बम्बई) उपाश्रय में हुआ।

आचार्य विजय वल्लभ सूरि के संवत् २००९, १० और ११ के चातुर्मास बम्बई में ही हुए। इसलिए मुनि इन्द्र विजय जी का संवत् २०१० का बारहवां चातुर्मास भायखला (बम्बई) तथा संवत् २०११ का तेरहवां चातुर्मास सान्ताक्रुज (बम्बई) में हुआ।

आचार्य विजय वल्लभ सूरि का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। यद्यपि उनकी आँखों का आपरेशन सफल हुआ था, परन्तु अन्य रोगों के कारण वे शिथिल

हो गए थे। परन्तु आत्मबल द्वारा वे सभी धार्मिक क्रियाओं का संचालन स्वयं करते थे। संवत् २०१० में लाल बाग के उपाश्रय में उन्होंने थुम्बा(राजस्थान) के श्री प्रताप चन्द्र को दीक्षा दी, उनका नाम रखा मुनि श्री ओंकार विजय और उनके गुरु घोषित हुए— मुनि श्री इन्द्र विजय जी। इस प्रकार मुनि ओंकार विजय जी मुनि श्री इन्द्र विजय जी के प्रथम शिष्य हुए, जिन्होंने तपस्या के क्षेत्र में अपूर्व गौरव प्राप्त किया।

आचार्य विजय वल्लभ सूरि ग्वालिया टैंक, बम्बई स्थित श्री महावीर जैन विद्यालय में रहते थे। इसीलिए यहीं मुनि इन्द्र विजय जी ने सुयगडांग सूत्र, ठाणांग सूत्र, दशपयन्ना आदि योगोद्वहन क्रियाएं कीं, जो ज्येष्ठ कृष्ण १४ संवत् २०१० को पूरी हुईं। वहीं आषाढ़ शुक्ल ५ को उन्होंने समवायांग सूत्र का योग प्रारम्भ किया जिसकी पूर्ति श्रावण कृष्ण ८ को हुई।

यद्यपि मुनि इन्द्र विजय जी का चातुर्मास सान्ताक्रुज में था, परन्तु वे योगोद्वहन के लिए महावीर जैन विद्यालय, ग्वालिया टैंक, आचार्य श्री की सेवा में आ जाते। वहीं श्रावण शुक्ल ७ को मुनि इन्द्र विजय जी ने उपांग सूत्र का योगोद्वहन किया।

जब सूर्य अस्तंगत हुआ

आचार्य विजय वल्लभ का स्वास्थ्य आयुर्वेदिक चिकित्सा से कुछ सुधरा तो अवश्य, परन्तु विशेष लाभ नहीं हुआ। वैद्यों की सलाह से वे सेठ कान्ति लाल के बंगले मरीन ड्राइव पर लाए गये। आखिर संवत्ँ २०११ की आश्विन कृष्ण दशमी की काल रात्रि आ गई। रात को दस बजे आचार्य श्री की नींद उचट गई। बेचैनी से बार-बार करवट बदलते रहे। मुनियों ने बड़ी देर तक उनका शरीर दबाया, परन्तु पीड़ा कम नहीं हुई। वे लेटे-लेटे पंच परमेष्ठियों का जप करने लगे। रात को दो बजे अचानक उठ बैठे। चौबीसों तीर्थंकरों का नाम लेकर नवकार महामन्त्र का जप करने लगे। क्षण-प्रतिक्षण स्थिति बिगड़ती गई और अन्त में उसी रात को दो बज कर बत्तीस मिनट पर आचार्य श्री की इहलीला समाप्त हो गई। भारत को ज्ञान का प्रकाश देने वाला विश्व वल्लभ विजय वल्लभ रूपी सूर्य सदा के लिए अस्तंगत हो गया।

प्रातःकाल गुरुदेव के पार्थिव शरीर को पालकी में रख कर, गोडी जी उपाश्रय लाया गया और एक बड़े चबूतरे पर रख दिया गया कि सब लोग अन्तिम दर्शन कर सकें। बम्बई के दूर-दूर उपाश्रयों में रहने वाले मुनिराज पायधुनी की ओर बिना रुके, बिना थके, आचार्य श्री के अन्तिम दर्शनार्थ पहुँचने लगे। सान्ताक्रुज से मुनि श्री इन्द्र विजय जी तथा अन्य मुनिराज गोडी जी पहुँचे।

आचार्य श्री का अन्त्येष्टि-संस्कार मोतीशा परिसर भायखला में किया गया, जहाँ उनकी समाधि बनी हुई है।

अनुभव, सेवा, कार्य कुशलता, भक्ति, सदाचार, विवेकशीलता, दूरदर्शिता आदि सद्गुणों के कारण आचार्य विजय समुद्र सूरि, आचार्य विजय वल्लभ के पट्टधर घोषित हुए। श्री संघ के सफल संचालन का भार उनके कन्धों पर आ पड़ा और उन्होंने कुशलतापूर्वक इस उत्तरदायित्व का निर्वाह करना प्रारम्भ किया।

नये नेतृत्व की छाया में

मुनि इन्द्र विजय जी आचार्य विजय वल्लभ सूरि के पास योगोद्वहन कर रहे थे। उनकी छाया छूट जाने पर उनके नये पट्टधर आचार्य विजय समुद्र सूरि के नेतृत्व में उन्होंने अपनी योगोद्वहन क्रिया प्रारम्भ की। मुनि श्री इन्द्र विजय जी ने कार्तिक शुक्ल ३ संवत् २०११ को भगवती सूत्र का योगोद्वहन प्रारम्भ किया, जो महीनों तक चलता रहा।

आचार्य समुद्र सूरि चातुर्मास समाप्त कर कुछ दिनों तक बम्बई में रहे। फिर मुनि मंडल के साथ गुजरात की ओर विहार प्रारम्भ किया।

अनेक नगरों को लाभान्वित करते हुए आचार्य विजय समुद्र सूरि सूरत पहुँचे। जहाँ बड़ा चौटा के उपाश्रय में मुनि इन्द्र विजय जी को गणि पदवी प्रदान की गई। इससे मुनि इन्द्र विजय जी परमार क्षत्रियों में सर्व प्रथम गणि हुए।

सूरत से विहार कर आचार्य समुद्र सूरि मुनि मंडल के साथ जगड़िया तीर्थ, भरूच, बड़ौदा, डभोई, बोडेली, अहमदाबाद, पानसर, महेसाणा को लाभान्वित करते हुए पाटण पहुँचे। यहीं पर चातुर्मास करने का निश्चय हुआ। अतः गणिराज इन्द्र विजय जी का संवत् २०१२ का चौदहवां चातुर्मास पाटण (गुजरात) में हुआ।

संवत् २०१२ का चातुर्मास पाटण में पूरा कर आचार्य विजय समुद्र सूरि गणि श्री इन्द्र विजय जी तथा अन्य मुनिवरों के साथ शंखेश्वर तीर्थ पहुँचे। यहाँ पर मुनि जिनभद्र जी ने गणि इन्द्र विजय जी को परमार क्षत्रियों की सेवा करने के लिए आचार्य श्री से प्रार्थना की। तदनुसार आचार्य जी ने गणि इन्द्र विजय जी तथा मुनि ओंकार विजय को बड़ौदा की ओर परमार क्षत्रियों की सेवा के लिए भेजा।

जब परमार क्षत्रियोद्धारक बने

परमार क्षत्रियों में जो बुराइयां घर कर गई थीं, उनमें मांस-मदिरा, आपसी कलह, द्वेष, जुआ, चोरी, अनमेल विवाह, बहु विवाह, पुनर्विवाह आदि प्रमुख थीं। इस क्षेत्र में कबीरपंथी, नीरांतपंथी, केवलपंथी, ईसाई मिशनरियां अपने ढंग से धर्म प्रचार कर रही थीं, पर उनका उद्देश्य परमार क्षत्रियों का सुधार न होकर अपना प्रभाव कायम करना था।

ऐसी विषम परिस्थिति में गणिवर्य इन्द्र विजय जी अपने शिष्य श्री ओंकार विजय के साथ बोडेली पहुँचे। जनता ने बड़े उत्साह से उनका स्वागत किया।

अब गणिवर्य इन्द्र विजय जी अपनी क्षत्रियोचित शारीरिक शक्ति, श्रमणोचित आत्म बल और तपस्या का संबल लेकर परमार क्षत्रियों की सेवा में कार्यं साधयामि-शरीरं पातयामि वा की भावना से अपने शिष्य श्री ओंकार विजय जी के साथ परमार क्षत्रियों के उद्धार कार्य में लग गए। इस कार्य में उन्हें आशातीत सफलता मिलने लगी। परमार क्षत्रियों की धर्म भावना दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी।

गणि जी ने कार्य की गम्भीरता देख कर निश्चय किया, कि इस क्षेत्र में लगातार कई वर्षों तक कार्य करना पड़ेगा। इसलिए चातुर्मास भी गांवों में ही करना होगा। इस निश्चय के साथ आपका संवत् २०१३ का चातुर्मास कारवण में सम्पन्न हुआ। चातुर्मास में प्रवचनों द्वारा ही धर्म भावना जगाई जाती है। गणिवर्य इन्द्र विजय जी का प्रवचन सुनने के लिए दूर दूर से लोग आते थे, जिनमें पटेलों की संख्या अधिक होती थी।

इसके पश्चात् गणि इन्द्र विजय जी का संवत् २०१४ का सोलहवां चातुर्मास छोटा उदयपुर में हुआ। चातुर्मास के बाद गणि जी गांव-गांव, घर-

घर जाकर लोगों को जैन धर्म की विशेषताएँ समझाते थे। इस लिए गणि जी एक आदर्श धार्मिक नेता के रूप में विख्यात हो गए। फिर इन्होंने लक्ष्मणी तीर्थ संघ की यात्रा का नेतृत्व किया।

गणि जी के प्रचार कार्य को देखकर वयोवृद्ध कार्यकर्त्ता मुनि जिनभद्रजी परम संतुष्ट हुए और प्रचार कार्य का सारा भार गणि इन्द्र विजय जी पर छोड़कर स्वयं बम्बई में रहकर धन संग्रह करने लगे।

तीर्थयात्रा की तमन्ना

बोडेली तथा आस पास के क्षेत्रों में प्रचार कार्य व्यवस्थित कर गणिवर्य इन्द्र विजय जी तीर्थ यात्रा की भावना लेकर आगे बढ़े। उन्होंने अपना संवत् २०१५ का सत्रहवां चातुर्मास बड़ौदा में किया। बड़ौदा के पुस्तकालय में गणिवर्य इन्द्र विजय जी को पावागढ़ के गौरवपूर्ण इतिहास का परिचय मिला। उन्होंने मन ही मन पावागढ़ तीर्थ के उद्धार का निश्चय किया।

बड़ौदा में चातुर्मास पूरा कर गणि इन्द्र विजय जी ने अपने तपस्वी शिष्य ओंकार विजय जी को साथ लेकर बम्बई की ओर प्रस्थान किया। बम्बई की दोबारा यात्रा होने के कारण उन्हें विशेष कष्ट नहीं हुआ। बम्बई के भायखला उपाश्रय में आपने संवत् २०१६ का अठारहवां चातुर्मास पूर्ण किया

भायखला में विधि-विधान सहित चातुर्मास समाप्त कर अब वे तीर्थाटन के लिए चल पड़े। उस समय मुनि जिनभद्र जी ने कहा— आप तो तीर्थाटन के लिए जा ही रहे हैं। पर मुनि ओंकार विजय जी को साथ न ले जाइए। ये बोडेली के प्रचार कार्य से सुपरिचित हैं। गणि जी मुनि श्री की बात टाल न सके। उन्होंने मुनि ओंकार विजय जी को परमार क्षत्रियों की सेवा के लिए बोडेली भेजा और स्वयं मुनि श्री राम विजय को साथ लेकर तीर्थाटन के लिए आगे बढ़े। वे पूना, सातारा, इसलामपुर, धावणगिरि, बैंगलूर होते हुए चित्रदुर्ग (कर्नाटक) पहुँचे। उनका संवत् २०१७ का उन्नीसवां चातुर्मास चित्र दुर्ग में सम्पन्न हुआ। यहाँ पर गणि जी ने उपधान तप कराया। फिर विहार कर हैदराबाद (आन्ध्र) होते हुए अंतरिक्ष तीर्थ पहुँचे और भगवान् पार्श्वनाथ के दर्शन किए।

अंतरिक्ष तीर्थ से विहार कर गणिवर्य इन्द्र विजय जी हिंगण घाट (महाराष्ट्र) पधारे। यहीं उन्होंने संवत् २०१८ का आपना बीसवां चातुर्मास

पूरा किया। इस चतुर्मास में उन्होंने एक अध्यापक से हिन्दी सीखी और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की राष्ट्रभाषा परीक्षा में सम्मिलित हुए। अब वे हिन्दी में धारा-प्रवाह भाषण करने लगे।

हिंगण घाट से विहार कर गणि जी भद्रावती तीर्थ पधारे। भद्रावती से अकोला, बालापुर, अमरावती, नागपुर, सिवनी, जबलपुर, कटनी मार्ग से उन्होंने तीर्थराज प्रयाग (इलाहाबाद) के लिए प्रस्थान किया। शीतकाल आ गया था। दिन रहते हाथ-पांव ठिठुरने लगते। सतना से आगे बढ़ने पर एक गांव में पहुँचे। शाम हो गई थी। रात काटने के लिए कहीं ठौर नहीं मिल रहा था। लोगों के बताने पर पंचायत घर पहुँचे। किन्तु वहाँ ग्रामोद्योग विभाग के अधिकारी व कर्मचारी डेरा डाले पड़े थे। वे मुर्गी और मत्स्य पालन के प्रचारार्थ आए हुए थे। इसके लिए सभा का आयोजन किया गया था। बहुत कहने सुनने पर मुनियों को कमरे के बाहर बरामदे में जगह मिल गई। एक सज्जन आए। वे जैन मुनियों के आचार विचार से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने गणि जी से नम्र निवेदन किया कि आज की सभा में आप भी दो शब्द कहें। गणि जी ने कहा कि मैं तो मछली, अंडा, मांस के विरुद्ध बोलूँगा। सज्जन ने साथियों से परामर्श किया। तै हुआ, कि जैन मुनि भले हमारे विरुद्ध बोलें, सुनने में क्या हर्ज है।

गणि जी सभा में पहुँचे, उन्होंने सोचा — यदि जैन धर्म की अहिंसा के सूक्ष्म तत्त्वों का विवेचन करूं तो इन हिंसकों के गले कुछ उतरेगा नहीं। इसलिए उन्होंने गांधी जी का नाम लेकर कहा — अहिंसा के पुजारी महात्मागांधी के तथाकथित भक्तो — जो यहाँ हिंसा के प्रचारार्थ पधारे हैं, क्या आप ने गांधी जी की आत्मकथा पढ़ी है। यदि हाँ, तो क्या यह भूल गए, कि इंग्लैंड जाने से पहले अपनी माता से उन्होंने तीन प्रतिज्ञाएं की थीं — (१) पर स्त्री गमन नहीं करूंगा। (२) मांस-मदिरा का सेवन नहीं करूंगा। (३) सदा सत्य बोलूंगा। ऐसे गांधी के वारिसो — क्या तुम लाज घोल कर इस तरह पी गए, कि खुले आम हिंसा का प्रचार कर रहे हो। मुर्गियाँ पालोगे, मारोगे, बेचोगे, अंडे खाओगे और दूसरों को खिलाओगे। इसी प्रकार मछलियों के साथ व्यवहार करोगे। क्या तुम दीन-धर्म और परमेश्वर को एकदम भूल गए। ऐसे जघन्य पाप तो राक्षस भी नहीं करते थे। मैं और क्या कहूँ। परमेश्वर से प्रार्थना कर सकता हूँ कि वह गांधी भक्तों को सुबुद्धि दे कि वे हिंसा के ऐसे कुकर्मों से — पापों से दूर रहें।

इस व्याख्यान से श्रोता ऐसे प्रभावित हुए, कि उन्होंने घोषणा की कि हम मुर्गी पालने नहीं देंगे। हम मछली पालन का विरोध करते हैं। इस विरोध से कांग्रेसियों की हिम्मत पस्त हो गई। उन्हें लेने के देने पड़ गए।

यहाँ से विहार कर गणिवर्य इन्द्रविजय जी ने प्रयाग में प्रभोषा, कौशाम्बी, पूरिमताल आदि तीर्थों के दर्शन किए। उसके पश्चात् वाराणसी में भेलूपुर, भदैनी, सिंहपुरी (सारनाथ) तीर्थों के दर्शनार्थ गए। सारनाथ के पूर्व गंगा तट पर चन्द्रपुरी तीर्थ है। वहाँ गणि जी चन्द्र प्रभु भगवान् के दर्शन कर कृत कृत्य हो गए।

अब बिहार के तीर्थों के दर्शन के लिए गणि जी आगे बढ़े। वहाँ पाटलीपुत्र (पटना), राजगृही, गुणायाजी, नालन्दा, क्षत्रिय कुंड, चंपापुरी, सम्मेत शिखर, पावापुरी, ऋजु बालुका, काकंदी आदि सभी तीर्थों के दर्शन किए। अब बिहार से लौट कर उत्तर प्रदेश के उत्तरी पश्चिमी क्षेत्रों के तीर्थों के दर्शन किए जिनमें अयोध्या, कंपिलाजी, शौरीपुर, आगरा, मथुरा, चौरासी, अहिच्छत्र मुख्य हैं। इन तीर्थों के पश्चात् गणि इन्द्र विजय जी दिल्ली, अम्बाला होते हुए लुधियाना पहुँचे, जहाँ आचार्य विजय समुद्रसूरि विराजमान थे। यहीं पर गणि इन्द्र विजय जी का संवत् २०१९ का इक्कीसवां चातुर्मास प्रारम्भ हुआ।

पुनः परमार क्षत्रियों के बीच

आचार्य समुद्र सूरि की इच्छा थी, कि गणि इन्द्र विजय जी कम के कम पाँच वर्षों तक पंजाब में रह कर इस क्षेत्र से भली-भाँति परिचित हो जाएँ, जैसे आचार्य विजय वल्लभ सूरि जी ने आचार्य समुद्र सूरि को पंजाब से परिचित कराया था। किन्तु इसी बीच बोडेली से मुनि जिनभद्र जी का पत्र आया कि "इस प्रदेश में ज्वार की मोटी मोटी रोटियाँ खा कर प्रचार के लिए कोई आए तो उसे यहाँ अधिक दिनों तक रोका नहीं जा सकता। हाँ, यदि आप गणिवर्य इन्द्रविजय जी को भेज सकें, तो बहुत अच्छा काम हो सकता है।"

इस पत्र पर विचार-विमर्श कर निश्चय हुआ, कि अपना चातुर्मास दिल्ली में पूरा कर गणिवर्य इन्द्र विजय जी बोडेली के लिए प्रस्थान करें। तदनुसार गणिवर्य जी का संवत् २०२० का बाईसवां चातुर्मास दिल्ली के सुप्रसिद्ध क्षेत्र किनारी बाजार में सम्पन्न हुआ।

नियत समय पर गणिवर्य श्री इन्द्र विजय जी ने मुनि श्री सुरेन्द्र विजय जी, मुनि श्री न्याय विजय जी और मुनि श्री राम विजय जी आदि के साथ बोडेली के लिए विहार शुरू किया।

बोडेली में जब श्री गणि जी के शिष्य मुनि श्री ओंकार विजय को पता चला कि गुरुदेव बोडेली पधार रहे हैं, तब उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। गुरुदेव की अगवानी के लिए राजस्थान की ओर चल पड़े। किन्तु गणि जी अपने गुरु आचार्य विकासचन्द्र सूरि जी के आग्रह पर पूर्व निर्धारित मार्ग बदल कर अलवर, जयपुर, अजमेर, व्यावर, पाली, वरकाणा, आबू , खराड़ी, पालनपुर को लाभान्वित करते हुए महेसाणा, अहमदाबाद होते हुए बोडेली पहुँचे जहाँ लोगों ने समारोह पूर्वक उनका भावभीना स्वागत किया।

उधर मुनि ओंकार विजय को जब पता चला, कि गुरुदेव अन्य मार्ग से बोडेली जा रहे हैं तब उन्हें बड़ी निराशा हुई। फिर भी गुरु दर्शन के लिए तीव्र गति से उस ओर चल पड़े।

गणि श्री इन्द्र विजय जी के बोडेली क्षेत्र में आ जाने से चारों ओर प्रसन्नता छा गई। उन्हें भी यह देख कर सन्तोष हुआ कि मेरी अनुपस्थिति में भी लोग धर्म के प्रति श्रद्धालु बने हुए हैं।

गणि जी से प्रेरणा लेकर अन्य परमार क्षत्रिय युवक भी आगे आए। डूमा गांव के धीरू भाई ने गणि जी से मुनिव्रत की दीक्षा ली, और उनका नाम रखा गया — मुनि श्री अमृत विजय।

इसी प्रकार ज्येष्ठ शुक्ल ११ संवत् २०२१ में समी (बनासकांठा) के जैसिंगभाई साकलचन्द ने गणि जी से संयम का व्रत लिया। उनका नाम रखा गया मुनि श्री अविचल विजय।

अब चातुर्मास का समय सन्निकट आ गया था, इसलिए गणिवर्य इन्द्र विजय जी का संवत् २०२१ का २३वां चातुर्मास बोडेली में सम्पन्न हुआ।

उपरिलिखित दो परमार क्षत्रियों की दीक्षा के बाद लोगों में दीक्षा लेने की होड़ सी लग गई। लफणी गांव के रामाभाई पुनाभाई ने दीक्षा ग्रहण की। उनका नाम रखा गया — मुनि (अब पंन्यास) श्री रत्नाकर विजय।

चातुर्मास पास आ गया था। अतः धर्म प्रेमियों के आग्रह पर गणिवर्य इन्द्र विजय जी का संवत् २०२२ का चौबीसवां चातुर्मास उसी क्षेत्र के मासर रोड

गांव में सम्पन्न हुआ।

गणिवर्य श्री इन्द्र विजय जी के धार्मिक और समाज सुधार के कार्यों का प्रभाव बड़े-बूढ़ों और नवयुवकों पर तो पड़ा ही, इस दौड़ में बालक भी पीछे नहीं रहना चाहते थे। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण लोगों को तब मिला, जब मासर रोड में पावागढ़ के समीपवर्ती गांव अंकेडिया के नौ वर्षीय बालक ने संयमपूर्वक मुनिव्रत लेने की भावना प्रकट कर लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया। यद्यपि इस बाल-दीक्षा का बड़ा विरोध हुआ, पर बालक की तीक्ष्ण बुद्धि और धार्मिक ज्ञान के कारण विरोध शांत हो गया, और गणिवर्य इन्द्र विजय जी द्वारा पौष कृष्ण ३ शनिवार संवत् २०२२ को यह छोटा बालक दीक्षा लेकर बाल-मुनि (अब पंन्यास) श्री जगच्चन्द्र विजय के नाम से विख्यात हुआ।

दीक्षा समारोह के पश्चात् गणि इन्द्र विजय जी ने अपने शिष्यों के साथ कावी तीर्थ की यात्रा की। तत्पश्चात् विभिन्न गाँवों में प्रचार कर चातुर्मास के लिए डभोई पधारे।

इस प्रकार गणिवर्य इन्द्र विजय जी का संवत् २०२३ का पच्चीसवाँ चातुर्मास डभोई में पूरा हुआ।

चातुर्मास के पश्चात् गणिवर्य इन्द्र विजय जी अमरेली, नसवाड़ी आदि गाँवों में धर्मप्रचार करते हुए जामली गाँव पहुँचे, जहाँ १३ गाँवों के परमार क्षत्रियों का सम्मेलन निश्चित किया गया था। इस सम्मेलन में मुख्यतः सामाजिक-कुरीतियों को समाप्त करने के लिए प्रस्ताव पारित हुए।

इसके पश्चात् गणि जी आठ महीनों तक विभिन्न गाँवों में घूम-घूम कर धर्म प्रचार करते रहे। तत्पश्चात् भक्तों की प्रार्थना पर बड़ौदा में चातुर्मास का कार्यक्रम बनाया गया जिससे गणिवर्य इन्द्र विजय जी का संवत् २०२४ का छब्बीसवाँ चातुर्मास बड़ौदा में सम्पन्न हुआ।

बड़ौदा में चातुर्मास पूरा कर गणि इन्द्र विजय जी ने पावागढ़ तीर्थ के आस-पास के गाँवों में विचरण किया, जो आठ महीनों तक चलता रहा। विभिन्न गाँवों में प्रचार करते हुए गणि जी बोडेली पधारे और वहीं चातुर्मास करना शिश्चित हुआ, जिससे गणिवर्य इन्द्र विजय जी का संवत् २०२५ का सत्ताईसवाँ चातुर्मास बोडेली में सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास के पश्चात् भमरिया, नवा कुआँ, हालोल-कालोल के अतिरिक्त अनेक गाँव भी प्रचार के लिए जुड़े।

परमार क्षत्रियों में अब अन्य दीक्षार्थी भी सामने आये। पाणीबार गाँव के श्री गोसाई भाई ने अपने दो पुत्रों के साथ छोटा उदयपुर में गणि इन्द्र विजय जी से दीक्षा ली। दीक्षा के बाद गोसाई भाई का नाम रखा गया— मुनि श्री गौतम विजय और उनके पुत्रों में श्री विष्णु भाई का नाम मुनि (अब पंन्यास) श्री वीरेन्द्र विजय और हरिभाई का नाम मुनि श्री हरिषेण विजय रखा गया।

दीक्षा के पश्चात् गणि इन्द्र विजय जी ने बड़ौदा में आगम प्रभाकर मुनि पुण्य विजय जी के षष्ठिपूर्ति-महोत्सव में सम्मिलित होकर नये मुनियों की बड़ी दीक्षा के लिए पालिताना के लिए प्रस्थान किया। पालिताना में नये मुनियों की बड़ी दीक्षा के बाद जैन भुवन पालिताना के ट्रस्टियों ने गणि जी से चातुर्मास करने की प्रार्थना की। परन्तु अन्तिम निर्णय करने के पहले पाटण श्री संघ की प्रार्थना स्वीकार कर ली गई। इसलिए गणिवर्य इन्द्र विजय जी का संवत् २०२६ का अट्ठाईसवाँ चातुर्मास पाटण (गुजरात) में सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास के पश्चात् विभिन्न गाँवों में प्रचार करते हुए गणि जी बोडेली आये, जहाँ वयोवृद्ध मुनि श्री जिनभद्र जी ने गणि जी से बड़े मार्मिक शब्दों में निवेदन किया — "भाई मैं तो नदी किनारे का वृक्ष हूँ। इस शरीर से बहुत अधिक काम लिया है। अब तो थकावट होगी ही और अब मैं परमात्मा के चरणों में जाने के लिए तैयार बैठा हूँ।

आप हमारे पहले मुनिरत्न हैं, जिन्होंने असह्य कष्ट उठा कर इस क्षेत्र में बहुत ही अधिक प्रचार कार्य किया है और आप कितने भाग्यशाली हैं कि आपके रत्न जैसे परमार जैन क्षत्रियों में से आठ शिष्य मिले हैं। इस जैन धर्म की मशाल को प्रज्वलित रखने का कार्य अब आप को ही सम्भालना है। आप विद्वान् हैं। आप के कार्यों से परमार भाई-बहनों को प्रेरणा मिलेगी।"

गणिवर्य इन्द्र विजय जी बोडेली क्षेत्र में प्रचार कार्य कर ही रहे थे कि आचार्य विजय समुद्र सूरि का उन्हें आदेश मिला कि पंजाब-केसरी आचार्य श्री विजय वल्लभ सूरि का जन्म शताब्दी समारोह मुख्य रूप से बम्बई में मनाया जायेगा। इसलिए आप वहाँ के लिए शीघ्र प्रस्थान करें। इस आदेशानुसार गणिवर्य इन्द्र विजय जी ने अपने कुछ शिष्यों के साथ बम्बई के लिए प्रस्थान

कर दिया। उधर राजस्थान होकर आचार्य विजय समुद्र सूरि जी शिष्यों के साथ बम्बई जा रहे थे। दोनों श्रमण-मण्डलों का मिलन रास्ते में ही हो गया। बम्बई पहुँचने पर गणि इन्द्र विजय जी का चातुर्मास भायखला में निश्चित हुआ। इसलिए उनका संवत् २०२७ का उन्तीसवाँ चातुर्मास बम्बई भायखला के मोतीशा उपाश्रय में सम्पन्न हुआ।

जन्म शताब्दी समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न होने के बाद संवत् २०२७ की वसन्त पंचमी को गणिवर्य इन्द्र विजय जी को आचार्य पद देने का निश्चय किया गया। तदनुसार वरली श्री संघ में नियत समय पर पदवी दान-समारोह प्रारम्भ हुआ।

गणिवर्य इन्द्र विजय जी को आचार्य पदवी देते हुए आचार्य समुद्र सूरि ने कहा— गणि श्री इन्द्र विजय जी महाराज परमार क्षत्रियोद्धारक मुनिपंगव हैं। उन्होंने अनेक मनुष्यों को अहिंसा प्रधान जैन धर्म पर आरूढ़ किया है। वे मधुर वक्ता, श्री संघ-निपुण एवं संयम पालन में शूर हैं। अतः उनको आचार्य पद प्रदान करते हुए मुझे अतिशय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

बोडेली में मुनि जिनभद्र जी का देहावसान हो गया था। इसलियें गुरुदेव की आज्ञा लेकर नूतन आचार्य श्री विजय इन्द्र दिन्न सूरि ने शिष्यों के साथ बोडेली के लिए प्रस्थान किया।

पूना श्रीसंघ के आग्रह पर आचार्य विजय समुद्र सूरि पूना पहुँचे। वहाँ उन्होंने गुरुवार पेठ की श्रीमाली धर्मशाला में अपने उत्तराधिकारी पट्टधर की घोषणा इस प्रकार की — गुरुदेव के प्यारे मुनि राजो, सम्प्रति मेरा स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है। डाक्टरों ने लिखना-पढ़ना, चढ़ना-उतरना, अधिक बोलना आदि मना कर दिया है। यह आप लोग अच्छी तरह जानते हो। इसके बावजूद मेरे हृदय में जो-जो बातें आई हैं, उन्हें मैंने आदर्श गुरुभक्त मुनिराज श्री वल्लभदत्त विजय जी महाराज से कह दी हैं। वह जानना आपके लिए परम आवश्यक है। इसलिए मन लगाकर सुनिये और उसे अमल में लाने के लिए निर्णय करें। मेरी जिन्दगी का क्षण भर भी भरोसा नहीं है। आप सब लोगों के समक्ष मैं आज्ञा के रूप में कहता हूँ, मेरे बाद उपाध्याय, पंन्यास, गणिवर्य तथा मुनि मण्डल और साध्वी मण्डल आचार्य विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी महाराज की आज्ञा का पालन करें। यह आज्ञा

गुरुदेव के समुदाय के जितने साधु-साध्वी हैं, सबके लिए है। चातुर्मास की आज्ञा वगैरह भी उन्हीं से लें।

नवीन आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरि अपनी शिष्य-मण्डली के साथ बोडेली पहुँचे। अब आस पास के नए गाँवों में धर्म-प्रचार होने लगा।

चातुर्मास का समय समीप जानकर बड़ौदा श्रीसंघ के पदाधिकारी जब बोडेली क्षेत्र में नए आचार्य श्री के दर्शनों के लिए और बड़ौदा में चातुर्मास की प्रार्थना के लिए पहुँचे, तो उन्हें यह देख कर आश्चर्य हुआ कि आचार्य श्री पेड़ की छाया में बैठकर ग्रामीण भाइयों को उपदेश दे रहे हैं।

बड़ौदा श्री संघ की प्रार्थना सुन कर आचार्य श्री ने बडौदा में चातुर्मास की स्वीकृति दे दी।

इस प्रकार आचार्य विजय इन्द्रदिन्न जी सूरीश्वर का संवत् २०२८ का तीसवाँ चातुर्मास बड़ौदा में सम्पन्न हुआ। इस चातुर्मास की प्रमुख उपलब्धि श्री वल्लभ अस्पताल बड़ौदा के लिए तीन लाख और बोडेली तीर्थ के लिये अच्छा धन संग्रह है।

बड़ौदा में चातुर्मास समाप्त कर आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि ने बोडेली के लिए विहार शुरू किया। उन्होंने आस-पास के गाँवों में पूर्ववत् धर्म-प्रचार करते हुए बोडेली में चातुर्मास का कार्यक्रम बनाया। अतः आचार्य विजय इन्द्रदिन्न सूरि का संवत् २०२९ का इकतीसवाँ चातुर्मास बोडेली में पूरा हुआ। चातुर्मास के पश्चात् आचार्य श्री अविलम्ब प्रचार कार्य में पुनः जुट गये। इसी बीच सूचना मिली कि आचार्य विजय समुद्र सूरि मालवा पधारे हैं। इसलिए उनके दर्शन के लिए आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि मालवा की ओर चल पड़े। जावरा में गुरु-शिष्य मिलन हुआ। संक्रान्ति समारोह सम्पन्न होने के पश्चात् आचार्य विजय समुद्र सूरि ने आचार्य विजय इन्द्रदिन्न सूरि से कहा कि आप उज्जैन, इन्दौर, मक्षी आदि की यात्रा करते हुए शिवपुरी होकर पंजाब की ओर विहार करें। तदनुसार आचार्य विजय इन्द्रदिन्न सूरि तीर्थ-यात्रा करते हुये शिवपुरी पधारे।

शिवपुरी में दीक्षा समारोह का आयोजन किया गया था, जहाँ दीक्षा के पश्चात् रमणभाई मुनि विनय रत्न, जैसिंहभाई मुनि विनोद विजय और बजेसिंह मुनि विद्युत रत्न विजय के नाम से प्रसिद्ध हुए और श्री रमणभाई की पुत्री मणिबेन और कपिलाबेन दीक्षित होकर क्रमशः साध्वी श्री मयूरकला और

साध्वी श्री कल्पकला के नाम से साध्वी-समुदाय में सम्मिलित हुईं।

शिवपुरी श्रीसंघ के आग्रह पर वहाँ चातुर्मास का कार्यक्रम बना। इस प्रकार आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि का संवत् २०३० का बत्तीसवाँ चातुर्मास शिवपुरी में सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास समाप्त होने के बाद आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि मुनि-मण्डल के साथ ग्वालियर, आगरा और दिल्ली के भक्तों को लाभान्वित करते हुए वर्षी-तप की पारणा के लिए हस्तिनापुर पहुँचे।

हस्तिनापुर में विधिवत् पारणा कर आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि जी भगवान महावीर स्वामी के पच्चीस सौवें निर्वाण-महोत्सव के आयोजन को सफल बनाने के लिए दिल्ली पहुँचे और वहीं चातुर्मास का कार्यक्रम भी बना।

इस प्रकार आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि का संवत् २०३१ का तैंतीसवाँ चातुर्मास दिल्ली के उपाश्रय में सम्पन्न हुआ।

उक्त समारोह में आचार्य विजय समुद्र सूरि जी शिष्यों के साथ पधारे थे। उनका चातुर्मास रूपनगर में सम्पन्न हुआ। इसी समय श्री विजय वल्लभ-स्मारक की कल्पना कार्यरूप में परिणत हुई।

महावीर स्वामी की पच्चीस सौवीं जयन्ती का मुख्य कार्यक्रम १३ नवम्बर को रामलीला मैदान में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ, जो आठ दिन तक चलता रहा। आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि ने प्रभु महावीर स्वामी के जीवन और सन्देश को देश-विदेशों में प्रचार करने तथा जैनों की एकता के लिये अनुरोध किया।

पंजाब में प्रचार

महोत्सव समाप्त होने के पश्चात् आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि ने हरियाणा की ओर विहार किया। वे रोपड़, हाँसी, हिसार, सिरसा आदि नगरों में विचरते हुए भटिण्डा पहुँचे और वहाँ एक महीने तक धर्मोपदेश करते रहे।

भटिण्डा से विहार कर लहरा, जीरा, अमृतसर, बटाला, पठानकोट आदि नगरों में धर्मोपदेश करते हुए जम्मू पहुँचे, जहाँ मन्दिर की प्रतिष्ठा के लिए आचार्य विजय समुद्र सूरि पहले ही पधार चुके थे। वहाँ की धार्मिक क्रियाएँ सम्पन्न कर वे लुधियाना पधारे जहाँ चातुर्मास निश्चित हुआ।

इस प्रकार आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि का संवत् २०३२ का चौंतीसवाँ चातुर्मास आचार्य समुद्र सूरि के साथ लुधियाना में सम्पन्न हुआ।

लुधियाना चातुर्मास समाप्त कर गुरुदेव की आज्ञा से उपधान तप कराने के लिए आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि बीकानेर गए। वहाँ से गुरुदेव के सुल्तान लोधी में दर्शन किये फिर पंजाब लौटकर वे विभिन्न नगरों — लसुडी, शाहकोट, नकोदर, शंकर, जंडियालागुरु, बेरावल, कपूरथला को लाभान्वित करते हुए होशियारपुर पहुँचे। यहाँ चातुर्मास करना निश्चित हुआ जिससे आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि का संवत् २०३३ का पैंतीसवाँ चातुर्मास गुरुदेव आचार्य श्री विजय समुद्र सूरि के साथ होशियारपुर में सम्पन्न हुआ।

होशियारपुर से विहार कर मालेर कोटला, सामाना, पटियाला होते हुये श्रमण मण्डल चण्डीगढ पहुँचा। वहाँ संक्रान्ति और श्री आत्मानन्द जैन सभा के तीसवें अधिवेशन को आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि ने सम्बोधित किया।

आचार्य समुद्र सूरि का स्वास्थ्य ठीक नहीं था, फिर भी मुरादाबाद में प्रतिष्ठा-महोत्सव नियत समय पर कराने के लिए उन्होंने विहार जारी रखा और संगरूर, बलदेव नगर, अम्बाला, जैन नगर छावनी, मालवा, बिजलपुर, सढोरा, विलासपुर, जगाधरी, ऋषिकेश होते हुए चीला तथा सामपुर के जंगली रास्ते को पार कर मुरादाबाद पहुँचे। वहाँ २४-४-७७ को प्रतिष्ठा महोत्सव प्रारम्भ हुआ। महोत्सव के अभी दस ही दिन बीते थे कि एक दिन रात में तीन बजे आचार्य समुद्र सूरि उठ बैठे। उन्होंने सूरि मन्त्र का जप और प्रतिक्रमण किया। फिर नवकार मन्त्र का जाप करने लगे। एका-एक उनका शरीर झुक गया। ठीक सवा छह बजे समाधिपूर्वक पूज्य श्री की आत्मा उनके नश्वर शरीर को छोड़कर दिव्य लोक का विहार करने चल पड़ी। सब लोग नवकार महामन्त्र की ध्वनि करने लगे। आचार्य श्री का अग्नि संस्कार दिल्ली हो या मुरादाबाद— इस पर कुछ विवाद उत्पन्न हुआ पर उनकी सभी अन्त्येष्टि-क्रियाएं मुरादाबाद में सम्पन्न हुईं।

श्रीसंघ की जिम्मेदारी

आचार्य विजय समुद्र सूरि के दिवंगत होने के बाद श्रीसंघ की जिम्मेदारी उनके पट्टधर आचार्य विजय इन्द्रदिन्न सूरि के कन्धे पर आ पड़ी। इसके बाद पूर्व आचार्य के शोक और नवीन पट्टधर आचार्य श्री विजयेन्द्र दिन्न सूरि की आशा में यह संक्रान्ति पर्व विधिवत् सम्पन्न हुआ।

आगरा के गुरु भक्तों ने मुरादाबाद में आचार्य श्री विजय समुद्र सूरि से अपने यहाँ चातुर्मास करने की प्रार्थना की थी, परन्तु उनके दिवंगत हो जाने पर आचार्य श्री विजयेन्द्र दिन्न सूरि से चातुर्मास करने की प्रार्थना की गई। अतः आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि का संवत् २०३४ का छत्तीसवाँ चातुर्मास आगरे में सम्पन्न हुआ।

आचार्य श्री ने अपने शिष्य मुनि जगच्चन्द्र विजय को, जो सांडेराव (राजस्थान) में चातुर्मास कर रहे थे, अपने पास बुला लिया।

आगरा संघ की ओर से आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि के नेतृत्व में शौरीपुर तीर्थ तक छरी पालित यात्रा निकाली गई जिससे लोगों में धार्मिक भावना की विशेष वृद्धि हुई। इसके बाद आचार्य श्री मुनि मण्डल के साथ हस्तिनापुर तीर्थ पधारे, जहाँ पारणा-मन्दिर का उद्घाटन कराना था। यहाँ कल्याण मन्दिर की अंजन शलाका प्रतिष्ठा हुई। आचार्य श्री की निश्रा में सरधना से हस्तिनापुर तीर्थ तक छरी पालित यात्रा भी निकली।

हस्तिनापुर से विहार कर मुनि मण्डल गाजियाबाद होते हुए अम्बाला पहुँचा। अम्बाला में ही चातुर्मास का कार्यक्रम रखा गया। इसलिए आचार्य श्री विजयेन्द्र दिन्न सूरि का संवत् २०३५ का सैंतीसवाँ चातुर्मास अम्बाला (हरियाणा) में हुआ।

अम्बाला चातुर्मास के पश्चात् परमार क्षत्रियों के दो भाग्यशाली बालकों— श्री शंकर भाई और लक्ष्मण भाई की भागवती दीक्षा आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि की निश्रा में सम्पन्न हुई, जो दीक्षा के बाद क्रमशः मुनि श्री अरुण विजय और मुनि श्री अमरेन्द्र विजय के नाम से विख्यात हुए।

अम्बाला से विहार कर मुनि मण्डल आचार्य श्री के साथ बटाला पहुँचा। वहाँ से कांगड़ा तीर्थ तक छरी पालित यात्रा संघ आचार्य श्री की निश्रा में निकाला गया। कांगड़ा में तीर्थ माला समारोह के अवसर पर आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि ने जैन भारती साध्वी श्री मृगावती को कांगड़ा

तीर्थोद्धारिका और महत्तरा की महत्त्वपूर्ण पदवियों से विभूषित किया। आचार्य श्री की निश्रा में भगवान् आदीश्वर के मन्दिर की शिलान्यास-विधि सम्पन्न हुई।

कांगड़ा से विहार कर आचार्य श्री पंजाब के विभिन्न नगरों — होशियारपुर, जालन्धर, लुधियाना, अम्बाला, लहरा, भटिण्डा, फाजिलका और गंगानगर होते हुये बीकानेर पहुँचे, जहाँ चातुर्मास का कार्यक्रम रखा गया। इस प्रकार आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि का संवत् २०३७ का अड़तीसवाँ चातुर्मास बीकानेर (राजस्थान) में सम्पन्न हुआ।

बीकानेर से विहार कर आचार्य श्री मुनि मण्डल के साथ बाडमेर पहुँचे।

यहाँ आचार्य श्री की निश्रा में बाडमेर से नाकोडां तीर्थ तक छरी पालित यात्रा संघ निकालकर सुश्राविका फताबाई की बड़ी पुरानी साध पूरी हुई।

बाड़मेर से यह श्रमण मण्डल जोधपुर पहुँचा, जहाँ दो बहनों को संयम की दीक्षा आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि की निश्रा में हुई। तदनन्तर आचार्य श्री विजयेन्द्र दिन्न सूरि बिजोवा पधारे, जहाँ संघ की प्रार्थना पर चातुर्मास सम्पन्न होना निशिचत हुआ।

अतः आचार्य विजयेन्द्रदिन्न सूरि का संवत् २०३८ का उन्तालीसवाँ चातुर्मास बिजोवा (राजस्थान) में सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास के पश्चात् विहार कर आचार्य श्री लठारा (राजस्थान) पहुँचे, जहाँ उपधान तप की आराधना बड़े सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् फालना, आबू, पालनपुर, महेसाणा, अहमदाबाद आदि नगरों को लाभान्वित करते हुये आचार्य श्री बड़ौदा पधारे। बड़ौदा के उपनगर सुल्तानपुर में पुराने मन्दिर की प्रतिष्ठा आचार्य श्री ने कराई। तत्पश्चात् आचार्य विजय वल्लभ सूरि की स्मृति में बने श्री वल्लभ अस्पताल का उद्घाटन बड़े समारोह के साथ आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि की निश्रा में हुआ।

बड़ौदा में आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि के सान्निध्य में दो भाग्यशालियों की दीक्षा हुई। दीक्षा के उपरान्त वे मुनि श्री देवेन्द्र विजय और मुनि श्री सूर्योदय विजय के नाम से प्रसिद्ध हुए।

बड़ौदा से विहार कर आचार्य श्री पावागढ़ पधारें, जहाँ उन्होंने पावागढ़ तीर्थ में मन्दिर, कन्याशाला आदि बनाने के लिये भूमि का निरीक्षण किया।

फिर वे पावागढ़ से बोडेली पहुँचे, जहाँ सादड़ी के प्रमुख गुरु भक्तों ने अपने यहाँ चातुर्मास करने के लिये विनती की, जो स्वीकृत कर ली गई। इसलिए आचार्य श्री ने मुनि मण्डल के साथ सादड़ी (राजस्थान) के लिये विहार शुरू कर दिया। गोधरा में भाग्यशाली परमार क्षत्रिय कुमार श्री नगीन भाई की भागवती दीक्षा हुई जो मुनि श्री योगेन्द्र विजय के नाम से प्रसिद्ध हुए। सादड़ी पहुँचने पर ठाट-बाट से चातुर्मास-प्रवेश कराया गया।

अतः आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि का संवत् २०३८ का इकतालीसवाँ चातुर्मास सादड़ी (राजस्थान) में सम्पन्न हुआ।

सादड़ी से विहार कर आचार्य श्री पाली पहुँचे। वहाँ आत्म वल्लभ समुद्र विहार नामक शिक्षा-संस्थान का उद्घाटन आचार्य श्री की निश्रा में सम्पन्न हुआ। पाली से विहार कर जब आचार्य श्री शिवगंज पहुँचे तब पालनपुर संघ के नेताओं ने अपने यहाँ चातुर्मास करने की विनती की, जो स्वीकृत हुई। शिवगंज से आचार्य श्री बेडा पधारे। वहाँ आप की निश्रा में परमार क्षत्रिय कुमारों की भागवती दीक्षा प्रदान की गई। दीक्षोपरान्त चन्दू भाई मुनि श्री पूर्ण चन्द विजय और पर्वत भाई मुनि श्री इन्द्रसेन विजय बन गये। कुमारी कान्ता बेन साध्वी पूर्णकला श्री के नाम से प्रसिद्ध हुई। बेडा से विहार कर आचार्य श्रीपालन-पुर पहुँचे जहाँ बड़े धूम-धाम से आचार्य श्री का चातुर्मास-प्रवेश कराया गया। इस लिए आचार्य विजय इन्द्र दिन्न सूरि का संवत् २०३९ का इकतालीसवाँ चातुर्मास पालनपुर में सम्पन्न हुआ।

पालनपुर में चतुर्मास समाप्त कर आचार्य श्री अहमदाबाद पधारे, जहाँ साध्वी श्री सुकुभालिका श्री जी ने ५०० आयंबिल की पारणा आचार्य श्री की निश्रा में कराई। अहमदाबाद की कई संस्थाओं के नेताओं ने आचार्य श्री से चातुर्मास करने की प्रार्थना की, जिसे स्वीकृति मिली।

अहमदाबाद से विहार कर आचार्य श्री मुनि मण्डल के साथ कपडवंज, पावागढ़, बोडेली, छोटा उदयपुर, अलीराजपुर आदि स्थानों को लाभान्वित करते हुये बोडेली पहुँचे। चातुर्मास सन्निकट था। इसलिये आचार्य श्री बोडेली से विहार कर सालपुरा, वाघोडिया, बड़ौदा होते हुये अहमदाबाद पहुँचे, जहाँ समरोह पूर्वक आचार्य श्री का चातुर्मास-प्रवेश कराया गया। इस प्रकार आचार्य विजय इन्द्रदिन्न सूरि का संवत् २०४० का बयालीसवाँ चातुर्मास नवरंगपुरा, अहमदाबाद में सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास के अनन्तर आचार्य श्री खेड़ा, आनन्द, नडियाद आदि नगरों को लाभान्वित करते हुये बड़ौदा के लाल बाग माजलपुर में श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिष्ठा और दीक्षा समारोह सम्पन्न कराने के लिये पधारे। दीक्षा के बाद शिवपुरी के श्री कपिल कुमार मुनि श्री चिदानन्द विजय और जम्बुसर के श्री पिनाकी कुमार मुनि श्री धर्मरत्न विजय के नाम से प्रसिद्ध हुये और बड़ौदा की कुमारी रागिणी बेन साध्वी श्री दिव्ययशा श्री कहलाई।

इसी समय गणिवर्य श्री जनक विजय जी को आचार्य पदवी प्रदान की गई और वे आचार्य विजय जनकचन्द्र सूरि के नाम से विख्यात हुए।

अहमदाबाद में ही बम्बई के विभिन्न उपाश्रयों के ट्रस्टी, पदाधिकारी और नेता आचार्य श्री से बम्बई में चातुर्मास करने के लिए निवेदन करने आए। गुरु भक्तों की प्रार्थना ध्यान से सुनी गई। परन्तु आचार्य श्री ने चातुर्मास का कार्यक्रम बाद में सूचित करने का आश्वासन दिया।

अब आचार्य श्री ने पालिताना तीर्थ के लिए विहार किया। पंजाबी गुरुभक्त वहाँ पहले ही पहुँच गए थे। पालिताना-प्रवेश के समय शोभायात्रा में अनेक सुप्रसिद्ध आचार्य, साधु-साध्वी, धनकुबेर और धर्म प्रेमी सम्मिलित हुए। आचार्य श्री के निवास की व्यवस्था राजेन्द्र भवन में की गई। फिर चतुर्विध संघ के साथ दादा की यात्रा शुरू, हुई। लगभग डेढ़ महीने तक आचार्य श्री ने पालिताना में निवास किया। यहीं पर मुनि श्री रत्नाकर विजय को आचार्य श्री की निश्रा में गणि पदवी दी गई। पदवी के समय चतुर्विध संघ के साथ अन्य आचार्य भी उपस्थित थे।

सिद्धाचल दादा के दर्शन कर आचार्य श्री विजयेन्द्र दिन्न सूरि साधु-समाज के साथ विहार कर मोरखार गाँव, पीपाला, सोनगढ़, बलभीपुर, धोलेरा, खंभात होते हुए कावी तीर्थ की यात्रा कर जंबूसर नगर पहुँचे। जंबूसर आचार्य विजय जनक चंद्र सूरि और मुनि धर्म रत्न विजय की जन्म भूमि है। वहाँ प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया था। तत्पश्चात् मासर रोड होते हुए आचार्य श्री ने बणछरा तीर्थ की यात्रा की।

अब आचार्य श्री करजन, मियागांव, पालेज, साधली, भरुच, पनोली, कोसुंबा, कीमसेंही, अमरेली, सूरत, भेस्तान, शचीन, दामन, नवसारी, गणदेवी वापी, बगवाडा, पालघर होते हुए बम्बई के एक उपनगर विरार पहुँचे, जहाँ

बम्बई के अनेक श्री संघों के नेता स्वागतार्थ प्रस्तुत थे। चातुर्मास की चारों ओर से प्रार्थना होने लगी।

इस सम्बन्ध में निश्चित हुआ कि आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि कुछ मुनियों के साथ बालकेश्वर उपाश्रय में चातुर्मास करेंगे और आचार्य विजय जनक चन्द्र सूरि पायधुनी के श्री गोडी जी उपाश्रय में चातुर्मास करेंगे। अन्य साधु-साध्वियों को विभिन्न उपाश्रयों में चातुर्मास के लिए भेजा जायगा।

इसलिए आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि का संवत् २०४१ का तैंतालीसवां चातुर्मास बम्बई स्थित बालकेश्वर उपाश्रय में सम्पन्न हुआ।

इस चातुर्मास में पावागढ़ तीर्थोद्धार तथा श्री वल्लभ स्मारक दिल्ली के लिए आशातीत कोष एकत्र हुआ। अगला चातुर्मास भी बम्बई में ही निश्चित हुआ। इसलिए आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरी का संवत् २०४२ का चौवालीसवां चातुर्मास भायखला बम्बई के मोतीशा उपाश्रय में सम्पन्न हुआ।

आचार्य श्री विजय जनक चन्द्र सूरि ने बालकेश्वर उपाश्रय में चातुर्मास किया। इस चातुर्मास में अनेक धार्मिक कार्य सम्पन्न किए गए। श्री वल्लभ स्मारक दिल्ली तथा पावागढ़ के लिए विभिन्न उपाश्रयों द्वारा कोष एकत्र हुआ, जिसमें आचार्य श्री के अतिरिक्त मुनियों और साध्वियों का योगदान सराहनीय रहा।

चातुर्मास के बाद विहार कर आचार्य श्री विजयेन्द्र दिन्न सूरि मुनि मण्डल के साथ विभिन्न उपनगरों को लाभान्वित करते हुए थाना पधारे, जहाँ गणि रत्नाकर विजय जी ने उपधान तप का आयोजन किया था। वहाँ उपधानतप विधि-विधान से सम्पन्न हुआ। थाना में ही दो मुनिवरों मुनिराज श्री जगच्चंद्र विजय और मुनिवर श्री नित्यानन्द विजय को गणि पदवी दी गई। अब वे गणिवर्य जगच्चंद्र विजय जी और गणिवर्य श्री नित्यानंद विजय जी के रूप में प्रसिद्ध हुए।

दीक्षा लेने वाले भाइयों में लफणी निवासी श्री लक्ष्मण भाई का नाम मुनि श्री लक्ष्मीरत्न विजय तथा उनके पुत्र विमल भाई का नाम मुनि श्री विद्या रत्न विजय रखा गया और दीक्षा लेने वाली यमुना बहन सुदक्षा श्री बन गईं।

थाना में सभी धार्मिक और सामाजिक कार्य सम्पन्न कर आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि ने मुनि मण्डल के साथ पुणे की ओर विहार किया। बेलापुर, पनवेल, खापोली, खंडाला, लोणावाला, कामसेट, तलेगांव, देहूरोड, चिंचवड़,

काला कुरुंडी, दापोली, शिवाजी नगर-गांवों-कस्बों और नगरों को लाभान्वित करते हुए पूना पहुँचे। पूना में लगभग पच्चीस दिनों तक रुक कर अनेक धार्मिक कार्य, ध्वजारोहण, उद्घाटन आदि सम्पन्न कर आचार्य श्री ने अकोला के लिए प्रस्थान किया, जहाँ मन्दिर की अंजन शलाका तथा दीक्षा समारोह का आयोजन किया गया था। मार्ग में अहमदनगर, जालना आदि स्थानों को लाभान्वित करते हुए अंतरिक्ष तीर्थ के दर्शन किए। इसके पश्चात् अकोला पहुँचने पर अनेक धार्मिक क्रियाएं सम्पन्न हुईं। दीक्षा लेने के बाद सुरेश भाई मुनि श्री सुरेन्द्र विजय, जसवंत भाई मुनि श्री दिव्यरत्न विजय, गुलाब भाई मुनि श्री जिनचन्द्र विजय और राजेश भाई मुनि श्री राजेन्द्र विजय बन गए।

आचार्य श्री का चातुर्मास अकोला में ही निश्चित था। इसलिए अकोला से विहार कर बालापुर, शेगांव आदि शहरों को लाभान्वित करने के बाद आचार्य श्री का अकोला में चातुर्मास-प्रवेश हुआ। इस प्रकार आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि का संवत् २०४३ का पैंतालीसवां चातुर्मास अकोला में सम्पन्न हुआ। अकोला से विहार कर आचार्य श्री अनेक गांवों-शहरों में धर्मोपदेश करते हुए पावागढ़ पहुँचे, जहाँ चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान् के मन्दिर की अंजन शलाका प्रतिष्ठा होने वाली थी। बड़ौदा श्री संघ की प्रार्थना पर आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि का संवत् २०४४ का छियालीसवां चातुर्मास बड़ौदा में सम्पन्न हुआ। बड़ौदा में चातुर्मास समाप्त कर आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि पावागढ़ पहुँचे। वहां मन्दिर की प्रतिष्ठा और कन्याछात्रावास का उद्घाटन कराया। तत्पश्चात् आचार्य श्री ने दिल्ली के लिए प्रस्थान किया।

पावागढ़ से प्रस्थान कर आचार्य श्री पारोली, गोधरा, डूंगरपुर, केसरिया जी, उदयपुर, राणकपुर, सादड़ी, वरकाणा, बिजोवा, पाली, मेड़तारोड होकर नागौर पहुँचे। वहाँ दीक्षा समारोह का कार्यक्रम रखा गया था। दीक्षा समारोह के बाद श्री पार्श्व कुमार का नाम मुनि श्री अमर पद सागर, श्री विजय कुमार का नाम मुनि अभय सागर रखा गया। अमिता बहन दीक्षा लेकर साध्वी विवेकपूर्वा श्री बन गईं।

नागौर की धार्मिक क्रियाएँ सम्पन्न कर आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि बीकानेर पहुँचे। बीकानेर का मुख्य कार्यक्रम दीक्षा समारोह था, जिसमें दीक्षा के बाद सुशीला बेन का नाम साध्वी श्री संयम रत्ना, सरिता बेन का नाम साध्वी श्री सौम्य दर्शना तथा बस्कर बेन का नाम साध्वी श्री सौम्य रत्ना रखा

गया। बीकानेर से विहार कर आचार्य श्री मुनि मण्डल के साथ दिल्ली के श्री विजय वल्लभ स्मारक पहुँचे। नगर-प्रवेश बड़े ठाट-बाट से हुआ। तत्पश्चात आचार्य श्री ने वासु पूज्य स्वामी के दर्शन किए।

चैत्र कृष्ण ११ संवत् २०४५ को विजय वल्लभ स्मारक में आचार्य विजय वल्लभ सूरि शताब्दी समापन समारोह और मीन संक्रान्ति का आयोजन किया गया जिसके सुख्य अतिथि थे, सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री अभय कुमार ओसवाल। आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में कहा कि "श्रावकों की तुलना मेघ से की जाती है। जैसे मेघ चारों ओर समान रूप से जल वृष्टि कर वसुन्धरा को हरा-भरा कर देते हैं, वैसे ही श्रावक, दाता बनकर अपने दान द्वारा धर्म के सातों क्षेत्रों का सिंचन करते हैं। गुरुदेव ने घोषणा की कि मैंने कल कहा था कि धर्म के सातों क्षेत्रों के सिंचन के लिए आचार्य विजय वल्लभ सूरि के दीक्षा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में सौ लाख का कोष एकत्र होना चाहिए। आज आप लोगों के सामने यह घोषणा करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है, कि आज के मुख्य अतिथि श्री अभय कुमार ओसवाल ने मुझे वचन दिया है कि मैं आपकी इस भावना को एक करोड़ का दान कर पूर्ण करूंगा। यह सुनते ही आचार्य विजय वल्लभ सूरि के जय-जय कार के नारों से सभा मण्डप गूंज उठा।

श्री अभय कुमार ओसवाल ने विनम्रतापूर्वक निवेदन किया— "मैंने पहली बार आज गुरुदेव के दर्शन किये हैं। चौदह वर्ष पहले लुधियाना के मेरे घर पर आप श्री पधारे थे। किन्तु दुर्भाग्य से उन दिनों मैं मद्रास था। इसलिए दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। गुरुदेव आज यदि मुझे भी मांग लेते तो मैं स्वयं को उनके चरणों में समर्पित कर देता।"

इस उद्‌गार से श्री अभय कुमार ओसवाल सबकी श्रद्धा के केन्द्र बन गए। लोगों ने अनुभव किया कि आज भी हमारे बीच दधीचि, शिबि, कर्ण, विक्रमादित्य और भामाशाह जैसे दानवीर हैं।"

दीक्षा शताब्दी समापन समारोह में अनेक वक्ताओं ने आचार्य श्री विजय वल्लभ महाराज का गुणानुवाद किया।

चैत्र शुक्ल १ संवत् २०४५ को आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि की निश्रा में रूपनगर दिल्ली के उपाश्रय में श्रीमद् विजयानन्द सूरि का जन्म दिन मनाया गया जिसमें वक्ताओं ने आचार्य विजयानन्द सूरि का गुणानवाद किया।

दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर आचार्य जी ने उपदेश दिए। आचार्य जी ने

आचार्य विजय वल्लभ शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में श्री वल्लभ स्मारक से हस्तिनापुर तीर्थ तक छरी पालित यात्रा संघ का नेतृत्व किया। ऐसी यात्रा वर्षों से देखने में नहीं आई थी। देश के विभिन्न भागों से भक्त सम्मिलित हुए थे। दिल्ली से गाजियाबाद, मेरठ-मवाना होते हुए यह यात्री दल हस्तिनापुर पहुँचा। इस यात्रा में कई संघपति थे। सबको तीर्थ माला पहनाई गई। अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर तपस्वियों के पारणा का दृश्य अद्‌भुत् था।

यद्यपि आचार्य श्री का चातुर्मास हस्तिनापुर में निश्चित था। परन्तु आचार्य विजय समुद्र सूरि के समाधि मन्दिर की प्रतिष्ठा के लिए मुरादाबाद में आचार्य श्री ने हस्तिनापुर से विहार कर मवाना होकर मेरठ पहुँचे। मेरठ जैन नगर में संक्रान्ति महोत्सव बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया, जिसमें आचार्य श्री ने अपना यह संकल्प व्यक्त किया कि मैं हस्तिनापुर तीर्थ में जप-तप करूँगा और दूसरों से भी कराऊँगा। पंजाब समस्या का हल इससे बढ़ कर और कोई नहीं है।

मेरठ से प्रस्थान कर आचार्य श्री बिनौली, बड़ौत, खिवाई, सरधना, कंकड़-खेडा, किठौर, लोधीपुर, गढ़मुक्तेश्वर वृजघाट आदि गांवों, कस्बों और नगरों को लाभन्वित करते हुए समाधि मन्दिर मुरादाबाद पहुँचे। पावागढ़ से विहार कर गणिवर्य जगच्चन्द्र विजय जी महाराज आचार्य जी से मिले। फिर आचार्य श्री का मुरादाबाद में संक्रान्ति के दिन प्रवेश हुआ। संक्रान्ति पर्व और समाधि मन्दिर में आचार्य विजय वल्लभ सूरीश्वर जी महाराज और आचार्य विजय समुद्र सूरि जी की मूर्तियों की प्रतिष्ठा कर आचार्य श्री मुजफ्फरनगर पहुँचे, जहाँ जिन मन्दिर की अंजन शलाका प्रतिष्ठा कराकर हस्तिनापुर के लिए विहार शुरू कर दिया।

आषाढ़ शुक्ल ६ संवत् २०४५ को आचार्य श्री विजयेन्द्र दिन्न सूरि का चातुर्मास प्रवेश बड़े ठाट-बाट से सम्पन्न हुआ।

इस प्रकार आचार्य श्री का संवत् २०४५ का सैंतालीसवां चातुर्मास हस्तिनापुर तीर्थ में प्रारम्भ हुआ।

हस्तिनापुर चातुर्मास में अनेक धार्मिक और सामाजिक कार्य सम्पन्न हुए, जिनमें उपधान तप करते हुए इकतालीस दिन का उपवास करने वाले श्री रघुवीर कुमार जैन ने तपस्या का कीर्तिमान स्थापित किया। आचार्य श्री की ४७वीं ओली का पारणा का लाभ श्री अभय कुमार ओसवाल ने लिया। योग

शिबिर का संचालन पूना के श्री रतनलाल ने किया जिससे लोगों ने बहुत अधिक लाभ उठाया। आचार्य श्री की ४८वीं ओली अभी पूरी हुई।

आश्विन कृष्ण ११ संवत् २०४५ को आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि की निश्रा में समयदर्शी आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभ सूरि महाराज की जयन्ती मनाई गई, जिसमें विभिन्न वक्ताओं ने आचार्य श्री का गुणानुवाद किया। अन्त में आचार्य श्री विजयेन्द्र दिन्न सूरि ने उनके जीवन और महत्त्वपूर्ण कार्यों का विस्तार से वर्णन किया।

कार्तिक कृष्ण ९ संवत् २०४५ को आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरि का ६६वां जन्म दिवस, समारोह पूर्वक मनाने का सौभाग्य हस्तिनापुर तीर्थ को प्राप्त हुआ।

उत्तरी भारत में सपन्न विविध योजनाएँ

पंजाब आदिकाल से वसुन्धरा का गरिमामय प्रदेश रहा है, सप्तसिन्धु या पंचनद प्रदेश में ही वैदिक ऋषियों ने साम–गान गाया था। विश्व विजय का आकांक्षी अलक्षेन्द्र को इसी प्रदेश में पराजय का मुख देख कर लौटना पड़ा था। जैन धर्म की गगन चुंबी पताकाएँ भी इस प्रदेश में फहराती थीं। किन्तु काल गति के अधीन जिन–शासन का स्वरूप मध्यकाल में लुप्त हो गया था जो आचार्य विजयानन्द सूरीश्वर जी महाराज की अद्वितीय प्रतिभा, सूक्ष्मदर्शिता और सत्यप्रियता से निखरकर सामने आया। आचार्य श्री के सत्प्रयत्नों से जिन मन्दिरों की पताकाएँ पुनः फहराने लगीं। घंटानाद और पूजा–आरती के सुमधुर स्वर समस्त पंजाब में गूँजने लगें।

जब आचार्य श्री का पंजाब के गुजरांवाला में (अब पाकिस्तान) देवगमन का समय हुआ तब आप श्री ने अपने शिष्य मुनि श्री विजय वल्लभ को आदेश देते हुए कहा – 'वल्लभ, मुझ से जो कुछ बन पड़ा किया, अब जिन शासन का उत्तरदायित्व तुझ पर है।' मुनि श्रेष्ठ विजय वल्लभ ने गच्छाधिपति और आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होते ही पंजाब का काया कल्प कर दिखाया। सारे भारत में पंजाब जैसा गुरु भक्त प्रदेश और कोई नहीं है। आचार्य विजय वल्लभ सूरीश्वर जी ने अनेक शिक्षा संस्थाओं की स्थापना कर शासन को संसार की दृष्टि में गौरवान्वित किया।

आचार्य श्री विजय वल्लभ सूरि के अधूरे कार्यों को पूरा किया

शान्ति–मूर्ति राष्ट्र संत आचार्य श्री विजय समुद्र सूरीश्वर जी महाराज ने। यहां एक बात ध्यान देने योग्य यह है कि इन सभी आचार्यों ने अपने पट्टधरों को पंजाब पर विशेष कृपा करने के लिए आदेश दिया है, आदेश ही नहीं पंजाब परिभ्रमण के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान किया है।

राष्ट्रसंत आचार्य विजय समुद्र सूरि को पंजाब के कल्याण का इतना अधिक ध्यान था कि उन्होंने अपने भावी पट्टधर आचार्य (अब गच्छाधिपति आचार्य) श्री विजय इन्द्र दिन्न जी को चिलचिलाती धूप में उग्र विहार कर पंजाब आने का आदेश दिया था, और उन्हें पंजाब से सुपरिचित कराया था।

वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरीश्वर जी महाराज यद्यपि पन्द्रह वर्षों तक पंजाब के बाहर राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र में धर्मोपदेश करते रहे पर उनके मन में पंजाब का स्मरण सदैव बना रहा। एक बार तो पावागढ़ में आप श्री ने पंजाबी गुरुभक्तों के आगमन के कारण अपना विहार स्थगित कर दिया था। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आचार्य श्री समय की पाबंदी का हमेशा ध्यान रखते हैं। वे पावागढ़ से विहार कर पंजाब की ओर उन्मुख हुए और राजस्थान के विभिन्न नगरों में धर्मोपदेश करते हुए दिल्ली के वल्लभ स्मारक पधारे। दिल्ली की यद्यपि स्वतन्त्र सत्ता है, पर वहां विभाजन के बाद पंजाबी गुरुभक्त अधिक संख्या में बस गए हैं और वे ही हस्तिनापुर तीर्थ के भी कर्ता–धर्ता हैं। अतः आचार्य श्री के पंजाब परिभ्रमण का कार्यक्रम दिल्ली से ही प्रारंभ समझना चाहिए।

हस्तिनापुर तीर्थ में दानवीर गुरुभक्त श्री अभय कुमार ओसवाल ने साधार्मिक भक्ति के लिए लुधियाना में विजयेन्द्र कालोनी बनाने की घोषणा की थी और कहा था कि आचार्य श्री जब लुधियाना पधारेंगे उसी समय विजयेन्द्र नगर का शिलान्यास समारोह संपन्न होगा।

पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार आचार्य श्री विजयेन्द्र दिन्न सूरि महाराज ज्येष्ठ शुक्ल 10 सं० 2046 तदनुसार दिनांक 13 जून 89 को मंगलवार के मंगलमय दिन एक्यावन साधु साध्वियों के साथ चतुर्मास के लिए लुधियाना पधारे। यद्यपि इसके पूर्व आचार्य श्री का गणि के रूप में संवत 2018 का इक्कीसवां और आचार्य के रूप में सं० 2032 का चौंतीसवां चतुर्मास लुधियाना में हुआ था। किन्तु वर्तमान चतुर्मास अनेक दृष्टियों से

ऐतिहासक बन गया। धार्मिक जागरण और जैन धर्म की अपूर्व प्रभावना के कारण अहमदाबाद के बाद अब लुधियाना दूसरी जैन नगरी बन गई है। लुधियाना प्रवेश के समय, पंजाबी गुरुभक्तों का उत्साह, अद्वितीय शोभा यात्रा विमानों द्वारा पुष्पवृष्टि, जैन–अजैन जनता द्वारा स्वागत, अप्सरा नृत्य से संयुक्त इन्द्रध्वज, अश्वारोहियों के रूप में भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों की झांकियां, पंजाबी भांगड़ा लोकनृत्य, मस्ती भरी चाल में चलते आधे दर्जन गजराजों द्वारा आचार्य श्री का अभिवादन, महावीर जैन महिलामंडल की मंगलघट धारिणी महिलाओं का गायन, घंटाघर पर बने विशाल उत्तुंग मंच से आचार्य श्री का उपदेश, आचार्य श्री के सडसठ वर्षी वय के प्रतीक 67 वन्दनवार सुसज्जित तोरण आदि दृश्य आकर्षण के केन्द्र बने हुए थे।

इस विशाल शोभा यात्रा ने जैन स्कूल में बने पंडाल में सभा का रूप धारण कर लिया जिसमें पंन्यास श्री नित्यानन्द जी ने समयानुकुल तथा आचार्य श्री ने एकता पर प्रवचन किया। इस सन्दर्भ में आचार्य श्री ने कहा, सभी सम्प्रदायों द्वारा एक मंच पर स्वागत करना बड़ी प्रसन्नता का विषय है। पंजाब के सभी सम्प्रदायों को संगठित होकर भारत का गौरव बढाना है। एकता के बल पर ही हम भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय एकता और अखंडता की रक्षा कर सकते हैं। आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वर जी महाराज कहा करते थे कि हमें ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि कोई भाई अनपढ़ नहीं रहे, भूखा न रहे, आवास विहीन न रहे। इसी लिए वे जीवन भर समाज की सेवा में लगे रहे। हमें उनके मिशन को सक्रिय होकर आगे बढ़ाना है।

आदर्श गुरुभक्त श्री अभयकुमार ओसवाल ने आचार्य श्री की भावना को साकार रूप देने के लिए और नगर प्रवेश की प्रसन्नता से विभोर होकर जी. टी. रोड पर तीन करोड़ लागत के 8 एकड़ भूमि में 750 फलैटों वाले विजयेन्द्र नगर आवास योजना तथा उसके प्रारंभिक व्यय के लिए एक करोड दान राशि की घोषणा की जिसका स्वागत उपस्थित जनता ने करतल ध्वनि द्वारा किया।

संक्रान्ति समारोह

आचार्य श्रीमद् विजयेन्द्र दिन्न सूरि के प्रवेश के दूसरे दिन ज्येष्ठ शुक्ल दशमी बुधवार दिनांक 14.6.89 को जैन सीनियर सैकेंडरी स्कूल में संक्रान्ति समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रांतों और नगरों से भक्तजन पधारे थे। पूरा पंडाल भरा था। प्रातः साढ़े सात बजे आचार्य श्री ने मंगलाचरण किया। तत्पश्चात् कार्यदक्ष पंन्यास श्री जगच्चन्द्र विजय, शान्तिदूत पंन्यास श्री नित्यानन्द विजय एवं ज्ञान–प्रभाकर मुनि श्री जयानन्द के अवसरानुकूल प्रवचन हुए।

अन्त में आचार्य श्री ने प्रवचन करते हुए कहा कि आजकल कांग्रेस सरकार अण्डे और मांस का प्रचार कर रही है। उसे हम तभी रोक सकते हैं जब हममें एकता होगी। आपने अंगुलियों का दृष्टांत देकर एकता की महत्ता समझाई। इसके अतिरिक्त लुधियाना विजयेन्द्र नगर आवास कालोनी में सहयोग देने के लिए सभी संघों का आह्वान किया। इस महोत्सव में श्री रघुवीर जैन ने संक्रान्ति भजन और बहन शिवरानी ने भक्ति गान गाया।

धर्मशाला का भूमि पूजन और शिलान्यास समारोह

आचार्य श्री विजयेन्द्र दिन्न सूरीश्वर जी महाराज गुरुवार आषाढ कृ. 11 29.6.89 को महावीर कालोनी सुन्दर नगर पधारे। आप श्री ने पूरन चन्द जैन मैमोरियल ट्रस्ट द्वारा बनने वाली धर्मशाला के लिए वासपेक्ष डाला। ट्रस्ट के अध्यक्ष रमेश कुमार जैन ने भूमि पूजन किया। आचार्य श्री ने धर्मशाला योजना की भूरि भूरि प्रशंसा की। इस मंगल अवसर पर श्री पूरन चन्द जैन परिवार ने विजयेन्द्र नगर योजना में एक फ्लैट के लिए पच्चीस हजार रुपये का दान देने की घोषणा की।

तत्पश्चात् आचार्य श्री की पावन निश्रा में पूरनचन्द के सुपुत्र सर्व श्री रमेश कुमार, डिप्टी कुमार और महेन्द्र पाल ने विजय मुहूर्त में धर्मशाला का शिलान्यास किया। इस समय सामूहिक आयंबिल व्रत रखा गया, जिसका लाभ भी श्री रमेश कुमार ने लिया।

उपधान तपस्या

आचार्य श्री विजयेन्द्र दिन्न सूरि के प्रवचनों से प्रभावित होकर अनेक भाई-बहनों ने उपधान तपस्या की जो चातुर्मास प्रवेश तिथि सोमवार आषाढ़ शुक्ल 14 तदनुसार 17.7.89 से प्रारंभ होकर मंगलवार श्रावण कृष्ण अमावास्या तदनुसार दिनांक 1.8.89 तक चलती रही।

श्री विजय-समुद्र-इन्द्र-बाल शिबिर

आचार्य श्री विजयेन्द्र दिन्न सूरि की प्रेरणा तथा मुनि सूर्योदय विजय के सत्प्रयासों से लुधियाना में पहली बार बाल शिबिर का आयोजन किया गया, जो शनिवार श्रावण कृष्ण 4 तदनुसार दिनांक 22.7.89 से प्रारंभ होकर भाद्रपद शुक्ल मंगलवार सं 2046 तक चलता रहा। शिबिर का आयोजन प्रति शनि और रवि को जैन स्कूल में किया जाता था जिससे छात्रों ने बड़ी संख्या में लाभ उठाया। इस अवसर पर बालकों के नैतिक और धार्मिक विकास के लिए 'संस्कार-सुवास' नामक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई।

विजयेन्द्र नगर आवास कालोनी

विजयेन्द्र नगर आवास कालोनी के निर्माण के लिए श्री आत्म-वल्लभ समुद्र-इन्द्र सेवा ट्रस्ट की स्थापना की गई है।

श्री विजयेन्द्र नगर आवास योजना की रूप रेखा

8 एकड़ भूमि में 750 फ्लैट 2 कमरे रसोई घर स्नान गृह बालकनी चार मंजिला इमारतों में बनाये जायेंगे। इस कार्यक्रम पर तीन करोड़ रुपया व्यय होगा।

सुविधाएँ

मन्दिर उपाश्रय (प्रवचन–भवन सहित) पुस्तकालय, औषधालय, स्कूल, समुदाय केन्द्र, खेल का मैदान तथा शापिंग सैंटर

कुछ मकान विधवाओं, विकलांगों एवं अन्य प्रकार से पीड़ित परिवारों के लिए, जिनकी आय का कोई निश्चित साधन नहीं है, आरक्षित हैं।

ट्रस्ट को आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के अन्तर्गत छूट की

स्वीकृति प्राप्त है। भुगतान 2500 रुपये प्रारंभ में, 100 रुपये प्रतिमाह 20 वर्षों तक और रख रखाव के लिए 25 रुपये प्रतिमास।

भूमि-पूजन

प्रातः स्मरणीय जैनाचार्य श्रीमद विजयेन्द्र दिन्न सूरीश्वर जी महाराज के आशीर्वाद से पंन्यास श्री जगच्चन्द्र विजय, पंन्यास श्री नित्यानंद विजय व साध्वी श्री सुमति श्री तथा अन्य श्रमण-श्रमणियों के पावन सान्निध्य में आषाढ़ कृष्ण 13 शनिवार तदनुसार दिनांक 1.7.89 को जगवल्लभ पार्श्वनाथ जैन मन्दिर तथा विजयेन्द्र नगर आवास कालोनी का भूमि पूजन सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री अभय कुमार ओसवाल और उनकी धर्म-पत्नी श्रीमती अरुणा ओसवाल ने ढाबा रोड शेरपुर लुधियाना में किया। इस समय जैन समाज के अनेकों गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस शुभ कार्य के लिए परमार क्षत्रियोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरी ने अपने मंगल संदेश में कहा था कि कलि काल कल्पतरु आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभ सूरि जी महाराज ने आत्मोत्थान के साथ साथ सामाजिक संगठन, शिक्षा, स्वावलम्बन एवं सेवा के आदर्शों को अपना जीवन मन्त्र बनाया था। एतदर्थ उन्होंने मध्यम वर्ग के उत्थान का सदैव ध्यान रखा। मेरी भी यही अन्तरभावना रही है जिसे मूर्त रूप देने के लिए गुरुभक्त श्री अभय कुमार ओसवाल ने श्री आत्म-वल्लभ-समुद्र-इन्द्र सेवा ट्रस्ट बना कर सराहनीय तथा अनुमोदनीय कार्य किया है। हमें यह बताते हुए विशेष प्रसन्नता हो रही है कि इस ट्रस्ट के अन्तर्गत वे एक आवासीय कालोनी बना रहे हैं। साथ ही जैन मन्दिर, उपाश्रय और स्कूल आदि का भी निर्माण कर रहे हैं। इस हेतु उन्होंने लुधियाना में अपनी मिल के पास आठ एकड़ भूखण्ड समर्पित कर दिया है और एतदर्थ वे एक करोड़ की विशाल धनराशि भी दे रहे हैं। समाज के अल्प आय वाले बहन भाइयों एवं निराश्रित तथा संतप्त लोगों में आवासीय फ्लैट आबंटित होंगे। अधिक प्रसन्नता की बात यह है कि हमारे लुधियाना चातुर्मास के पूर्व ही इस शुभ कल्याणमय कार्य का भूमिपूजन और शिलान्यास होने जा रहा है। पंजाब के दूषित वातावरण से दुखी मानवों के लिए वे रोजगार का भी प्रबंध करेंगे, ऐसा आश्वासन श्री ओसवाल जी ने मुझे दिया है।

हमें पूरा विश्वास है कि मानव सेवा की यह योजना शीघ्र साकार रूप लेगी

जिससे जन मानस की आकांक्षाएं पूर्ण होंगी और भाई ओसवाल का संकल्प फलीभूत होगा।

समाज के श्रेष्ठ वर्ग एवं धनी वर्ग से भी मैं अपेक्षा करता हूँ कि वे इस यज्ञ में यथाशक्ति योगदान देकर पुण्य के भागी बनेंगे एवं धर्म और गुरुदेवों के नाम उज्ज्वल करेंगे।

शिलान्यास समारोह

आषाढ़ शुक्ल 6 रविवार तदनुसार 9 जुलाई 1989 को जैन दिवाकर पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्र दिन्न सूरीश्वर जी महाराज के पावन सान्निध्य में जिन मंदिर एवं विजयेन्द्र नगर का शिलान्यास समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर जैन समाज के विशिष्ट गण्यमान्य अग्रणी उपस्थित थे।

शिलान्यास समारोह प्रातः 10 बजे आचार्य श्री के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। तत्पश्चात आचार्य श्री ने प्रवचन में कहा, प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह साधर्मिक भक्ति करे। वर्तमान परिस्थितियों में जैनियों की बहुलता और संपन्नता के बावजूद कतिपय जैनियों को रोटी, कपड़ा और आवास उपलब्ध नहीं है। अतः इसके लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। परम गुरुभक्त श्री अभय कुमार ओसवाल ने कहा कि मैं आज अपने को परम सौभाग्यशाली मानता हूँ कि आचार्य श्री जी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से विजयेन्द्र नगर के लिए दृढ़ संकल्प हूँ। आचार्य श्री के आशीर्वाद के बल पर आश्वासन देता हूँ कि आगामी वर्ष 1990 की 9 जुलाई को सभी फ्लैट निर्मित कर जैन भाइयों को समर्पित कर दूँगा।

सभा का संचालन करते हुए ट्रस्ट के महामन्त्री श्री सिकन्दर लाल जैन ने ट्रस्ट की परियोजना सविस्तर बता कर ट्रस्ट का उद्देश्य पूरा करने के लिए सबका योगदान प्राप्त करने के लिए अपील की। समागत अतिथियों ने परियोजना के लिए दानराशि अंकित कराकर ट्रस्ट को सहयोग प्रदान किया।

जिन मंदिर और आवास कालोनी के शिलान्यास स्थल पर आचार्य श्री के मांगलिक अभिमंत्रित वासक्षेप डालने के पश्चात् श्री अभय कुमार ओसवाल,

उनकी पत्नी श्रीमती अरुणा ओसवाल, उनके दो पुत्र एवं पुत्री द्वारा मंदिर तथा आवास कालोनी की आधारशिला रखी गयी। अन्य आठ शिलाएँ अन्य आठ महानुभावों ने रखीं।

कमर्शियल सेंटर का भूमि पूजन और शिलान्यास

रविवार आषाढ़ शुक्ल 6 तदनुसार 9.7.89 को प्रातः वेट गंज, लुधियाना में आचार्य विजयेन्द्र दिन्न सूरीश्वर जी महाराज के पावन सान्निध्य में कमर्शियल सेंटर का भूमि पूजन समारोह संपन्न हुआ। आचार्य श्री की निश्रा में उसी दिन शाम को 6 बजे शिलान्यास समारोह का भी आयोजन किया गया। भूमि पूजन और शिलान्यास का लाभ लुधियाना निवासी मुनि लाल बाल कृष्ण, वेट गंज ने लिया। स्मरण रहे कि आचार्य श्री ने विजयेन्द्र नगर का शिलान्यास समारोह संपन्न कर चिलचिलाती धूप में पद यात्रा कर वेट गंज पधारे थे।

सुन्दर नगर में प्रभु प्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक 13.7.89 को प्रातः 6.20 पर भगवान् श्री शान्तिनाथ प्रभु आदि की जिन प्रतिमाएँ गुरु मूर्तियां, देव देवी प्रतिमाएँ शुभ मुहूर्त में आचार्य श्री विजयेन्द्र दिन्न सूरीश्वर जी महाराज की शुभ निश्रा में प्रतिष्ठित हुई। प्रत्येक प्रतिमा विराजमान करने वाले परिवार ने घंटा ध्वनि उद्घोषित करने के पश्चात प्रतिष्ठा की।

मूल नायक भगवान् श्री शान्तिनाथ की प्रतिमा श्री अभय कुमार ओसवाल (अध्यक्ष ओसवाल एग्रो मिल्स) भगवान् श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा (देवेन्द्र कुमार जैन परिवार) भगवान् मुनि सुव्रत स्वामी की प्रतिमा डी. के. ओसवाल हौजरी लुधियाना द्वारा विराजमान की गयी।

कलश स्थापन श्री संघ के प्रधान श्री श्रीपाल बिहारे शाह, ध्वजारोहण (वंशपरंपरागत) श्री रला राम गुजरांवाला परिवार द्वारा संपन्न किया गया।

इसके अतिरिक्त अन्य प्रतिमाओं की स्थापना विभिन्न भाग्यशालियों द्वारा की गई।

प्रभु प्रतिष्ठा के पश्चात सुन्दर नगर लुधियाना में नवनिर्मित दादावाड़ी में तीन गुरुदेवों दादा गुरु आचार्य जिन भद सूरि, आचार्य विजयानन्द सूरि और

पंजाब केसरी आचार्य विजय वल्लभ सूरि के चरण चिह्न पूज्य आचार्य श्री की निश्रा में प्रतिष्ठित किए गए।

प्रतिष्ठा के पश्चात् आचार्य श्री की पावन निश्रा में धर्मसभा का आयोजन किया गया जिसमें आचार्य श्री के मंगलाचरण के पश्चात् ज्ञान प्रभाकर मुनि श्री जयानन्द विजय के शिष्य मुनि श्रीजय कीर्ति विजय की बड़ी दीक्षा हुई।

अन्त में आचार्य श्री ने नूतन मुनि तथा उपस्थित जन समुदाय के लिए उपदेशात्मक प्रवचन किया।

कर्क संक्रान्ति समारोह

आषाढ़ शुक्ल 13 रविवार तदनुसार दिनांक 16.7.89 को कर्क संक्रान्ति समारोह सुन्दर नगर के विशाल पंडाल में प्रातः 8 बजे आचार्य विजय श्री इन्द्रदिन्न सूरि की निश्रा में मनाया गया जिसमें विविध गीत संगीत और प्रवचन हुए। पंन्यास श्री नित्यानन्द विजय, ज्ञान प्रभाकर मुनि श्री जयानन्द विजय के पश्चात् आचार्य श्री ने जन समुदाय को संबोधित करते हुए चातुर्मास में आत्मा निर्मल करने के लिए जप–तप साधना करने का आग्रह किया। आप श्री ने कहा, जीवन में सुख शान्ति के लिए धर्म की आराधना आवश्यक है। भगवान् के बताए हुए मार्गों पर चल कर ही हम आत्मा का उद्धार कर सकते हैं।

सिंह संक्रान्ति समारोह

बुधवार श्रावण शुक्ल 14 तदनुसार दिनांक 16.8.89 को आचार्य विजय इन्द्रदिन्न सूरि की पावन निश्रा में आत्म नगर लुधियाना में संक्रान्ति का आयोजन स्कूल के विशाल पंडाल में किया गया। प्रारम्भ में स्कूल के प्रमुख श्री हीरा लाल जैन ने आचार्य श्री तथा साधु–साध्वियों का स्वागत किया। तत्पश्चात् संक्रान्ति कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। आचार्य श्री के मंगलाचरण के पश्चात् आत्म स्कूल की छात्राओं ने नवकार महामंत्र की धुन सुनाई। यह संक्रान्ति पर्व जैन एकता और विश्वशान्ति के रूप में मनाया गया।

अतः वक्ताओं ने इस विषय को ध्यान में रख कर भाषण किये। वक्ताओं में ज्ञान प्रभाकर मुनि श्री जयानन्द विजय, शान्ति दूत पंन्यास श्री नित्यानन्द विजय, स्थानकवासी साधु सुव्रत श्री और साध्वी सीता देवी, साध्वी सुमति श्री,

भारत जैन महामंडल के अध्यक्ष नृपराज जैन, हीरा लाल जैन, आत्मानन्द जैन महासभा (उत्तरी भारत) के महामंत्री श्री सिकन्दर लाल जैन आदि उल्लेखनीय हैं।

अन्त में आचार्य श्री ने कहा, आज पंजाब में आतंकवाद फैला हुआ है, उसे समाप्त करना हो तो वह तपस्या के बलपर संभव है। तप से शान्ति स्थापित हो सकती है। आप श्री ने सभी भाई बहनों से तपस्या शुरू करने के लिए कहा जिससे जीवन शुद्ध एवं निर्मल बन सके।

जैन एकता के संबंध में आचार्य श्री ने सुझाव दिया कि जैन धर्म के चारों सम्प्रदायों को महावीर के झंडे के नीचे एक हो जाना चाहिए, भले, प्रत्येक संप्रदाय अपनी परंपरा के अनुसार उपासना पद्धति चलाता रहे।

पर्युषण महापर्व

भाद्रपद कृष्ण 12 सोमवार से भाद्रपद शुक्ल 4 सोमवार सं० 2046 तक पर्युषण महापर्व समारोह आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्र दिन्न सूरि की पावन निश्रा में संपन्न हुआ जिसमें अनेक प्रकार की विधियों जप–तप आराधना उपासना के धार्मिक कार्य सफलता पूर्वक संपन्न किए गए। अष्टाह्निका तथा कल्पसूत्र के चार प्रवचन आचार्य श्री एवं पंन्यास श्री नित्यानंद विजय तथा शेष प्रवचन पंन्यास श्री वीरेन्द्र विजय, मुनि श्री अरुण विजय, पंन्यास श्री जगच्चन्द्र विजय, मुनि श्री सूर्योदय विजय और ज्ञान प्रभाकर मुनि श्री जयानंद विजय द्वारा संपन्न किए गए।

पर्युषण महापर्व के अन्तर्गत अनेक साधु–साध्वी श्रावक श्राविकाओं ने उपवास, अट्ठाई, वर्षी तप, आयंबिल, वर्धमान तप ओली, नवकार पद आराधना, डेढ़मासी तप, एकान्तर उपवास आदि तपस्याएँ सुख शान्ति पूर्वक कीं। इनके अतिरिक्त साध्वियों के उत्तराध्ययन एवं आचारंग सूत्र की योगोद्वहन क्रियाएँ चलती रहीं। भाद्रपद शुक्ल 4 दिनांक 4-9 को संवत्सरी पर्व विश्व मैत्री की पावन भावना से संपन्न हुआ।

तपस्वियों का अभिनन्दन समारोह :–

रविवार भाद्रपद शुक्ल 10 तदनुसार दिनांक 10.9.89 को आयोजित हुआ जिसमें तपस्वियों को श्रीफल, चान्दी के सिक्के, गुरुदेव का चित्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कन्या संक्रान्ति महोत्सव :-

आश्विन कृष्ण 1 शनिवार दिनांक 16.9.89 को कन्या संक्रान्ति महोत्सव जिसे क्षमापना संक्रान्ति कहते हैं, समारोह पूर्वक जैन स्कूल के प्रांगण में बने विशाल मंडप में आयोजित किया गया जिसमें भारत के विभिन्न राज्यों से संक्रान्ति भक्त पधारे थे। आचार्य श्री के मंगलाचरण के पश्चात् कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जिस में अनेक साधु-साध्वी, श्रावक–श्राविकाओं के गीत भजन और प्रवचन हुए। उपस्थित सभी लोगों ने आचार्य श्री से जानी अनजानी त्रुटियों के लिए क्षमा–याचना की तथा आपस में भी एक दूसरे से क्षमा याचना की।

आचार्य विजय वल्लभ सूरि की 35 वीं पुणय तिथि :–

आश्विन कृष्ण 11 रविवार तदनुसार दिनांक 24.9.89 को आचार्य विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी महाराज की निश्रा में गुरुवल्लभ की 35 वीं पुण्य तिथि जैन स्कूल के विशाल पंडाल में मनाई गई जिसमें साधु साध्वियों और श्रावक श्राविकाओं के 'गुरु वल्लभ उपकार' विषय पर ज्ञान वर्धक भाषण हुए। अन्त में आचार्य श्री ने उपस्थित श्रोताओं को संबोधित करते हुए गुरु वल्लभ के धार्मिक और लोकोपकारी कार्यों का विस्तार पूर्वक विवेचन किया इस अवसर पर गीत, संगीत और नृत्य आदि के मनोरंजन कार्यक्रम भी हुए।

पूज्य आचार्य श्री जी का विचार दर्शन

परमार क्षत्रियोद्धारक, चारित्र-चूडामणि, वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य श्री मद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी महाराज का धर्म-दर्शनः कुछ प्रेरक विचार

महान् विभूतियों का जीवन-दर्शन धर्म और नीति की मीमांसा होता है। दृष्टि और दृष्टिकोण के दायरों से दूर और परे। वे मन, वचन और कर्म के समन्वय से एक वीतरागी और स्वस्थ दर्शन के प्रतिरूप प्रेरक विचारों के प्रकाश-पुंज से जीवन-पथ को आलोकित करते हैं। निम्नांकित पंक्तियों में गुरुदेव का दर्शन उन्ही के शब्दों में दिया जा रहा है :-

1. संस्कार और वातावरण :-

संस्कार अपने आसपास का वातावरण एवं परिवार सन्तों के जीवन को निर्मित करते हैं, प्रभावित करते हैं। धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन, साधु-साध्वियों का सत्संग ही हमें जीवन के उदात्त तत्त्वों को नियन्त्रण करने की सामर्थ्य प्रदान करता है। धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन और सत्संगति के पश्चात् यह अनुभूति होती है कि सांसारिक मोह-माया की अपेक्षा अहिंसा, सत्य, प्रेम, अस्तेय और अपरिग्रह का जीवन श्रेयस्कर है।

2. प्रेरक पुण्य-पुंज और कर्म :-

प्रथम तो मेरे चाचा ने मेरे जीवन-निर्माण को प्रभावित किया। मेरे पिता यह अनुभव करते थे कि वे सांसारिकता के मोहपाश में अपना जीवन व्यतित कर चुके हैं। वे चाहते थे कि मैं अपना जीवन संवार लूं। मेरे चाचा मेरी दीक्षा के लिए कृत संकल्प थे। साहित्य प्रेमी गुरु विनय विजय मुनि जी की प्रेरणा स्वतः स्फूर्त थी। वे सांसारिकता और आध्यात्मिका की मिलन स्थली थे। नश्वरता और अमरत्व उनके चरित्र में बांहों में बांहें डाले चलते थे। गुरु रंग विजय जी का प्रभाव भी मुझ पर काफी गहरा रहा।

3. दीक्षा पूर्व एवं दीक्षोपरान्त प्रेरक व्यक्तित्व :-

शासन प्रभावना के भाव सुषुप्ति से जागृति की ओर मुनि रतनविजय जी और मुनि हेम विजय जी की कृपा से ही जीव-धर्म, अस्तेय, अपरिग्रह और

अहिंसा के सिद्धांतों की गहरी सूझ विकसित हो पाई । स्याद्वाद और अनेकांतवाद की प्रासंगिकता को सहज भाव से मुनि विनय विजय जी से सीखा।

4. आचार्य पद से अलंकृत क्षण :-

आचार्य श्रीमद् विजय समुद्र सूरीश्वर जी महाराज ने जिस क्षण मुझे आचार्य पद से अलंकृत किया, और मैंने इस पद गरिमा के लिए समर्पित भाव से कार्य करने का संकल्प किया। उन्हीं क्षणों में गरिमा और गौरव के साथ-साथ यह विनम्र अनुभूति भी हुई थी कि इस पद की शोभा को बढ़ाने के साथ-साथ पात्रत्व ग्रहण करने का आभ्यास ही मेरे भावी जीवन का लक्ष्य होगा।

5. उदारता एवं सहिष्णुता का परस्पर संबंध :-

दीन-दुखियों का उद्धार करना, प्रत्येक व्यक्ति के प्रत्येक नयन के प्रत्येक आँसू को पोंछना, दूसरों को उनकी आवश्यकतानुसार देना, दान करना, समाज-सुधार करना, दलितोद्धार करना, शोषण के विरुद्ध आवाज उठाना उदारता है। किसी भी विपत्ति के समय परिस्थितियों से जूझने की ताकत उदारता के गुण की गहराई से ही उपजती है। सहिष्णुता, उलझन भरी समस्या का मुकाबला चुनौती के रूप में कर के समाधान करना है।

6. साम्प्रदायिकता का भीषण दानव :-

धर्म को लोगों ने धोखे की दुकान बना रखा है। वे उसकी आड में स्वार्थ सिद्धि करते हैं। बात यह है कि लोग धर्म को छोड़ कर संप्रदाय के जाल में फँस रहे हैं। संप्रदाय बाह्य कर्त्तव्यों पर जोर देते हैं। वे चिन्हों को अपनाकर धर्म के सार-तत्त्व को मसल देते हैं। धर्म मनुष्य को अंतुर्मुखी बनाता है, उसके हृदय के किवाड़ों को खोलता है ; उसकी आत्मा को विशाल, मन को उदार तथा चरित्र को उन्नत बनाता है। संप्रदाय संकीर्णता सिखाते हैं; जात-पाँत, रूप-रंग तथा ऊँच-नीच के भेदभावों से ऊपर नहीं उठने देते।

साम्प्रदायिकता से जूझने के लिए निम्नलिखित राह पर चलें -

1. सभी से प्रेम करो।
2. ऋग्वेद के ऋषि की बात मानते हुए इक्ट्ठे चलो।
3. कथनी और करनी के अन्तर को समाप्त करो।
4. किसी को अपने से नीचा न समझो।
5. विचार-भेद महत्त्वहीन है। सभी प्राणियों का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है।
6. अहिंसा, मैथुन से अलिप्त रहना और सत्य का प्रचार और प्रसार होना चाहिए।
7. सभी एक समान हैं। किन्हीं दो व्यक्तियों में कोई भेद नहीं।
8. दया धर्म का मूल है, अभिमान पाप का कारण है।
9. सत्यवादी हरिश्चन्द्र की तरह किसी भी परिस्थिति में झूठ न बोलने की प्रतिज्ञा करो।
10. किसी सम्प्रदाय से घृणा न करो। घृणा केवल उसी से करो जो इस सिद्धान्त को न माने।
11. जीव-धर्म का पालन सब के साथ करें।
12. याद रखें कि धर्म के नाम पर बहुत लहू बहा है। महान् वही है जिसकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं है।
13. साम्प्रदायिक लोग अथवा सम्प्रदायवादी छोटे विचार वाले होते हैं।
14. किसी सम्प्रदाय अथवा जीवन-दर्शन के आधार पर किसी से घृणा मत करो।

7. विश्व बन्धुत्व की क्षमता :-

अयं निजः परोवेत्ति गणनां लघु चेतसाम्
उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

जैन धर्म विश्व-धर्म बनाने का सूत्र बताता है। विश्व बन्धुत्व की भारतीय परम्परा आज के परिप्रेक्ष्य में पूर्ण तथा सक्षम सिद्ध हो सकती है। पानी जहाँ जहाँ जाता है, सब की मलिनता दूर कर देता है; सबकी प्यास बुझाता है। इसी प्रकार जैन धर्म सभी को प्रेम सिखाता है। मन के भेदों को समाप्त करता है। सभी को एक समान समझता है। प्राणी मात्र के साथ मैत्री रखने की शिक्षा देता है। कहा भी है - सभी से मैत्री रखो, किसी से शत्रुता नहीं।

8. भारतीय संस्कृति के मूलभूत तत्त्वों की प्रासंगिकता

जीवन के ढहते हुए मूल्यों और बदलते हुए प्रसंगों में भारतीय संस्कृति की सामासिकता, निर्वैयक्तिकता के गुणों से भी अधिक मैत्रीभाव ही वह मूलभूत तत्त्व है जो आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। विषयवासनाओं से दूर रहना, झूठ न बोलना, चोरी न करना, परिग्रह की ममता से दूर रहना आदि वे गुण हैं जिनसे प्राणी मात्र का उद्धार सम्भव है। परन्तु मैत्रीभाव इन सब से ऊपर है। विदेशी भी आकर हमारे यहाँ इसी लिए बस गए क्यों कि मैत्री मुदिता और करुणा हमारी संस्कृति की प्रमुख विशेषताएं रही हैं।

9. जैन धर्म की वर्तमान परिप्रेक्षय में प्रासंगिकता

वर्धमान महावीर से 2500 वर्ष बाद भी जैन धर्म स्वप्न भंग, मोहभंग,संत्रास के आधुनिक युग में प्रासंगिक बना हुआ है। जो व्यक्ति जैन-धर्म को अपना ले उसे कोई समस्या फिर जटिल नहीं लगेगी। धर्म और दर्शन के चारुतर आयामों का संस्पर्श और ऊँचे-ऊँचे तत्त्वों का समावेश स्याद्वाद के माध्यम से संभव है। जैन धर्म के सिद्धान्तों के आधार पर समग्र विश्व का उद्धार होगा। सभी झगड़े मिटेंगे और सारा विश्व एकता के सूत्र में बंध कर एक नीड़ हो जाएगा। जीवन के ढहते मूल्यों वाली परिस्थिति को भी जैन धर्म ही चुनौती दे सकता है।

10. जैन धर्म के बाद कौन ?

विश्व के सभी धर्मों के परिप्रेक्ष्य में यदि जैन धर्म के पश्चात् किसी दूसरे धर्म को स्थान देने की बात हो तो मैं यह कहूँगा कि जैन-धर्म के आधार पर ही हम एकता के सूत्र में रह कर विश्व का कल्याण कर सकते हैं। सर्वधर्म समन्वय और सर्वधर्म समभाव हमारी संस्कृति की विशेषता रही है। श्वेताम्बर, दिगम्बर, तेरापन्थी, स्थानकवासी, सनातनधर्मी सभी इक्ट्ठे रह सकते हैं। फिर भी यदि जैन धर्म के बाद किसी अन्य धर्म को दूसरा स्थान देने की बात हो तो मैं यह स्थान सनातन धर्म को दूंगा। सनातन धर्म मानता है कि दूसरे के दर्द को समझना ही मानवता है। गाँधी जी भी सनातनी थे और उन्होंने उसी वैष्णव जन को मानव माना जो पराई पीर को अपना समझे।

11. जैन धर्म का सर्वाधिक प्रेरक महापुरुष

अतीत वर्तमान का बिना भेद किए यदि कोई मुझ से पूछे कि जैन-धर्म के किस महापुरुष ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया है तो मैं जैनाचार्य श्री श्री 1008 विजय वल्लभ सूरीश्वर जी महाराज का नाम लूँगा।

12. धार्मिक एवं वैचारिक असहिष्णुता

जन मानस में बढ़ती हुई असहिष्णुता का कारण यह है कि अलग-अलग लोगों के अलग-अलग विचार हैं। मेरा मत यह है कि सभी के विचार सुनो पर चलो उसी पर जहाँ मन और आत्मा कहे। जो ऐसा नहीं करेगा उसे सन्मार्ग का भी त्याग करना पड़ेगा। गंगा गए गंगा दास, जमना गए जमना दास वाला स्वभाव नहीं अपनाना चाहिए। आज असिहष्णुता का कारण यह है कि लोगों के दिलों की विशालता कम हो गई है। आचार ही सबसे बड़ा धर्म है। कर्म का आचरण करने वाले ही पण्डित हैं। लोगों के जीवन संकुचित हो गए हैं। इसलिए वैचारिक और धार्मिक असहिष्णुता का जन्म हो रहा है।

13. धार्मिक रीति-रिवाजः आध्यात्मिकता के लिए बाधक या साधक ?

अच्छे विचारों से आध्यात्मिकता प्राप्त होती है। मन (काया और आचार) शुद्ध होते हैं। भ्रष्ट होने पर सब कुछ गंदा हो जाता है। धर्म का आचरण करने वाला ही पण्डित है। रीति-रिवाज कर लेने या उपाश्रय में जाकर माथा टेकने से कुछ नहीं होता। ये संस्थागत धर्म के चिह्न हैं। इनमें जाने पर तभी लाभ होगा जब आचरण की पवित्रता हो।

14. विश्व सुरक्षा एवं विश्व-शान्ति

संसार के दोनों बड़े देशों (अमेरिका एवं रूस) के पारस्परिक संबंध धर्म और नीति के आयामों पर आधारित हों तो विश्व सुरक्षा एवं शान्ति की गारन्टी सम्भव हो सकती है। जब तक सत्ता की महत्ता नहीं समाप्त होगी तब तक सभी एक दूसरे को दबाते चलेंगे। हमें घृणा की चेष्टा को बन्द करना होगा। इसके बिना मनुष्य दूसरे को गिराने की सोचता रहेगा। महापुरुष वही है जो दूसरे को नीचे दबाने की बजाए ऊपर पहुँचाना चाहता है। इस विषय में ममता एक मात्र त्राण है।

15. मानव की हताशा व विवशता

स्वप्न भंग, मोहभंग, संत्रास, कुण्ठा और तनाव से जूझता आज का मानव समृद्धि और विकास के बावजूद हताश और विवश इसलिए है कि उसने अपने मन को छोटा कर लिया है। जमीनों और सीमाओं के क्षेत्रफल बढ़ रहे हैं तथा हृदय का क्षेत्रफल कम से कम होता जा रहा है। हृदय की विशालता की कमी ने ही इस हताशा, विवशता से जुड़ी कुण्ठा को जन्म दिया है।

16. धर्म का चारुतर स्वरूप

संस्थागत, आचारगत, विचारगत, धार्मिक, दार्शनिक तथा आध्यात्मिक स्वरूप धर्म से जुड़े हैं। अहिंसा, संयम और तप यदि जीवन में आ जाएं तो सब कुछ आ जाता है।

17. समृद्धि का अशान्ति से सम्बन्ध

जैन धर्म में दो प्रकार की समृद्धि का वर्णन किया गया है। पहली पाप की समृद्धि और दूसरी पुण्य की समृद्धि। पाप की समृद्धि से अशान्ति और पुण्य की समृद्धि से शान्ति की प्राप्ति होती है। झगड़ू के पास इतना धन था कि वह सारे संसार को भोजन करा सकता था। परन्तु उसने, वह धन और बखार भर कर अनाज बादशाह द्वारा मांगे जाने पर, यही कहा कि यह तो दीन दुखियों के लिए है। यह संसार बड़ अर्थात् बरगद की तरह तीन सौ वर्ष तक धरती से जल और पर्यावरण से वायु लेने वाले वट का नहीं है अपितु कमलिनी के फूल वालों का है जो दिन में उत्पन्न हो कर रात को मर जाती है परन्तु दूसरों को आनन्द और सौन्दर्य प्रदान करती है। जीवन का सौन्दर्य देने में है लेने में नहीं।

18. दर्द (पीड़ा) का दर्शन एवं दार्शनिकता से संबंध

जो व्यक्ति केवल सुख ही देख चुका है वह जीवन का वर्णन नहीं कर सकता। जो दुःख भोग चुका है वही जानता है कि सुख दुःख में कैसे रहा जाता है या रहना चाहिए। जो दर्द में है वही दार्शनिक हो सकता है। जो पीड़ा में है वही दृष्टि का स्वामी होगा। पीड़ा ही दर्शन को जन्म देती है।

19. सा विद्या या विमुक्तये

सच्ची विद्या वही है जो मन को संशय से , काया को आलस्य से और आत्मा को भ्रम से विमुक्त करे । इन्द्रियों पर विजय पाने वाला व्यक्ति ही सच्चा वीर है । जीवन को बन्धनों से मुक्त करना ही विद्या का उद्देश्य है ।

20. गुरु शिष्य परम्पराः आधुनिक परिप्रेक्ष्य

आज के बदलते परिवेश में गुरु वह है जो हमारे जीवन को अज्ञान के अन्धेरे से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाए ।

21. आदर्श-विद्यार्थी

आदर्श-विद्यार्थी वही है जो विद्या पढ़ कर स्वयं ऊपर उठ जाए और जो उसके निकट आने वाले हैं वे भी ऊपर उठ जाएँ । "सा विद्या या विमुक्तये"को सार्थक करे । मुक्त करो, मुक्त रहो - मुक्ति ही शिक्षा का अन्तिम प्रमाण है ।

22. आदर्श-अध्यापक

आदर्श अध्यापक वह है जो ऊँचे कर्म करे, परिश्रमी हो, अपना जीवन ऊपर उठाए, छात्र-छात्राओं का जीवन ऊपर उठाए, महर्षि संदीपनी की तरह कृष्ण और सुदामा जैसे शिष्यों को सिखाए कि दीन दुखियों के उद्धार की भावना और धर्म का आचरण करके जीवन को सफल बनाए । कीचड़ में उगे कमल के फूल की तरह समाज की बुराइयों से दूर रहे । विद्यार्थियों को भी संसार बन्धनों से अलिप्त कराए ।

23. नैतिक शिक्षा का पाठ्यक्रम में स्थान

छात्र-छात्राओं को भारतीय संस्कृति, जैन साहित्य, जैन धर्म, जैन दर्शन का ज्ञान कराना चाहिए । आसमान में उड़ता हुआ पक्षी एक पंख से जिस प्रकार उड़ नहीं सकता उसी प्रकार नैतिक शिक्षा के पंख के बिना विद्यार्थी भी जीवन के आकाश में उड़ नहीं सकता । शिक्षक जैन धर्म और दर्शन का अध्येता होना चाहिए । वह स्वयं भी उठे तथा छात्र-छात्राओं को भी उठाए ।

पू. आचार्य श्री जी का शिष्य-प्रशिष्य परिवार

1. पू. श्री ओंकार विजय जी *
2. मुनि श्री अमृत विजय जी *
3. मुनि श्री अविचल विजय जी *
4. पंन्यास श्री रत्नाकर विजय जी
5. पंन्यास श्री जगच्चन्द्र विजय जी
6. पंन्यास श्री वीरेन्द्र विजय जी
7. मुनि श्री गौतम विजय जी
8. मुनि श्री हरिषेण विजय जी
9. मुनि श्री भद्रबाहु विजय जी
10. मुनि श्री विनय रत्न विजय जी
11. मुनि श्री विनोद विजय जी
12. मुनि श्री अरुण विजय जी
13. मुनि श्री अमरेन्द्र विजय जी
14. मुनि श्री रवीन्द्र विजय जी
15. मुनि श्री सूर्योदय विजय जी
16. मुनि श्री देवेन्द्र विजय जी
17. मुनि श्री योगेन्द्र विजय जी
18. मुनि श्री पूर्णचन्द्र विजय जी
19. मुनि श्री इन्द्रसेन विजय जी
20. मुनि श्री कनक चन्द्र विजय जी
21. मुनि श्री लक्ष्मीरत्न विजय जी
22. बालमुनि श्री विद्यारत्न विजय जी
23. बालमुनि श्री जिनचन्द्र विजय जी
24. बालमुनि श्री राजेन्द्र विजय जी
25. मुनि श्री इन्द्रजित विजय जी
26. मुनि श्री दिव्यरत्न विजय जी (पंजाबी)

आज्ञानुवर्ती श्रमण परिवार

27. आचार्य श्री जनकचन्द्र सूरि जी
28. पंन्यास श्री वसंत विजय जी
29. पंन्यास श्री नित्यानंद विजय जी
30. गणिवर्य श्री जयन्त विजय जी
31. मुनि श्री राम विजय जी
32. मुनि श्री मुक्ति विजय जी
33. मुनि श्री हीर विजय जी
34. मुनि श्री हरिहर विजय जी
35. मुनि श्री हिम्मत विजय जी
36. मुनि श्री चन्द्रोदय विजय जी
37. मुनि श्री जितेन्द्र विजय जी
38. मुनि श्री नयचन्द्र विजय जी
39. मुनि श्री जयानंद विजय जी
40. मुनि श्री धर्मधुरन्धर विजय जी
41. मुनि श्री हर्षद विजय जी
42. मुनि श्री हेमचन्द्र विजय जी
43. मुनि श्री यशोभद्र विजय जी
44. मुनि श्री विशुद्ध विजय जी
45. मुनि श्री कनक विजय जी
46. मुनि श्री नवीनचन्द्र विजय जी
47. मुनि श्री लक्ष्मीचन्द्र विजय जी
48. मुनि श्री चिदानंद विजय जी
49. मुनि श्री धर्मरत्न विजय जी
50. मुनि श्री धर्मशील विजय जी
51. मुनि श्री दिव्यरत्न विजय जी
52. मुनि श्री जयकीर्ति विजय जी

* ये चिन्ह वाले मुनिवर स्वर्गवासी हो चुके हैं।

पूज्य आचार्य श्री जी का आज्ञानुवर्तिनी श्रमणी परिवार

प्रवर्तिनी साध्वी श्री दान श्री जी का परिवार

१	प्रवर्तिनी साध्वी श्री विद्याश्री जी- आदि	2
२	साध्वी श्री ओंकार श्री जी	9
३	साध्वी श्री भद्रा श्री जी साध्वी श्री सुज्ञान श्री जी	5
४	साध्वी श्री सुधर्मा श्री जी	2
५	साध्वी श्री प्रवीण श्री जी	3
६	साध्वी श्री कान्ता श्री जी	4
७	साध्वी श्री कंचन श्री जी	4
८	साध्वी श्री हेमेन्द्र श्री जी	3
९	साध्वी श्री सुसीमा श्री जी	3
१०	साध्वी श्री कनकप्रभा श्री जी	3
११	साध्वी श्री दर्शन श्री जी	2
१२	साध्वी श्री प्रबोध श्री जी	1
१३	साध्वी श्री प्रकाश श्री जी	1
१४	साध्वी श्री निर्मला श्री जी	5
१५	साध्वी श्री चन्द्रयशा श्री जी	3
१६	साध्वी श्री सुमति श्री जी	8
१७	साध्वी श्री सुव्रता श्रीजी	3
१८	साध्वी श्री सुमिता श्री जी	6
१९	साध्वी श्री कल्पयशा श्री जी	4
२०	साध्वी श्री चंदनबाला श्री जी	2

प्रवर्तिनी साध्वी श्री कपूर श्री जी साध्वी श्री हेम श्री जी का परिवार

१	प्रवर्तिनी साध्वी श्री विनीता श्री जी साध्वी श्री मुक्ति श्री जी - आदि	4

२	साध्वी श्री अभय श्री जी	4
३	साध्वी श्री चन्द्रोदया श्री जी	6
४	साध्वी श्री वीरेन्द्र श्री जी	9
५	साध्वी श्री यशकीर्ति श्री जी	4

साध्वी श्री चित्त श्री जी का परिवार

१	साध्वी श्री जय श्री जी	
२	साध्वी श्री पद्म लता श्री जी	8
३	साध्वी श्री जितेन्द्र श्री जी	3
४	साध्वी श्री जसवंत श्री जी	6
५	साध्वी श्री चन्द्रकला श्री जी	1
६	साध्वी श्री चित्तरंजन श्री जी	7
७	साध्वी श्री विचक्षण श्री जी	1
८	साध्वी श्री प्रवीण श्री जी	6
९	साध्वी श्री मुक्ति श्री जी	1
१०	साध्वी श्री रंजन श्री जी	6
११	साध्वी श्री रत्नयशा श्री जी	4
१२	साध्वी श्री जनक श्री जी	1
१३	साध्वी श्री कमलप्रभा श्री जी	
	साध्वी श्री कीर्ति प्रभा श्री जी	6

साध्वी श्री जडाव श्री जी

साध्वी श्री लक्ष्मी श्री जी का परिवार

१	साध्वी श्री कनकप्रभा श्री जी	
	साध्वी श्री कमलप्रभा श्री जी	9
२	साध्वी श्री जगत श्री जी	5
३	साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी	
	साध्वी श्री नंदा श्री जी	4

४	साध्वी श्री दर्शन श्री जी	3
५	साध्वी श्री चरण श्री जी	2
६	साध्वी श्री नरेन्द्र श्री जी	4
७	साध्वी श्री देवेन्द्र श्री जी	1
८	साध्वी श्री रक्षित प्रज्ञा श्री जी	2

साध्वी श्री संपत श्री जी का परिवार

१	साध्वी श्री सुमंगला श्री जी	20
२	साध्वी श्री अमितगुणा श्री जी	
३	साध्वी श्री पुष्पा श्री जी	
४	साध्वी श्री सुशीला श्री जी	
५	साध्वी श्री कुसुम प्रभा श्री जी	
६	साध्वी श्री अमृतप्रभा श्री जी	

छरीपालित संघ

बटाला से कांगड़ा तीर्थ
बीकानेर से जैसलमेर तीर्थ
बोडेली से लक्ष्मणी तीर्थ
डिग्रस से भद्रावती
सरधना से हस्तिनापुर
स्मारक दिल्ली से हस्तिनापुर
बड़ौदा से कावी
लोनार से अंतरिक्ष पार्श्वनाथ (सिरपुर)
बाडमेर से नाकोडा

उपधान तप की आराधना

बीकानेर (२)
हिंगणधाट
थाणा
लाठारा
हस्तिनापुर
लुधियाना

जिनालय अंजन शलाका प्रतिष्ठा

हस्तिनापुर (पारणा मंदिर)
बड़ौदा (मांजलपुर)
अकोला
पावागढ़
विजय वल्लभ स्मारक दिल्ली,
गुजरात, मासररोड, खोडसल,
भमरिया, डुमा, शानतलावड़ी,
धरोलिया
राजस्थान :- बीकानेर, जजो, नागौर,
लुणकरणसर
उत्तर प्रदेश :-मुरादाबाद, (समाधि
मंदिर) आगरा, मुजफ्फरनगर
हरियाणा :- जगाधरी, अम्बाला
पंजाब :- लुधियाना (सुंदर नगर)
फाजिल्का
महाराष्ट्र :- अकोला

चातुर्मास सूची

1942	ढूढोर	(गुजराज)
1943	पालनपुर	(गुजरात)
1944	लखतर	(गुजरात)
1945	राजकोट	(गुजरात)
1946	पालीताणा	(गुजरात)
1947	वड़नगर	(राजस्थान)
1948	पिंडवाड़ा	(राजस्थान)
1949	सादड़ी	(राजस्थान)
1950	पालनपुर	(गुजरात)
1951	पालीताणा	(गुजरात)
1952	बम्बई	(महाराष्ट्र)
1953	बम्बई	(महाराष्ट्र)
1954	बम्बई	(महाराष्ट्र)
1955	पाटण	(गुजरात)
1956	कारवण	(गुजरात)
1957	छोटा उदेपुर	(गुजरात)
1958	बड़ौदा	(गुजरात)
1959	बम्बई भायखला	(महाराष्ट्र)
1960	चित्रदुर्ग	(कर्नाटक)
1961	हिंगणघाट	(महाराष्ट्र)
1962	लुधियाना	(पंजाब)
1963	दिल्ली	(दिल्ली)
1964	बोडेली	(गुजरात)
1965	मासररोड	(गुजरात)
1966	डभोई	(गुजरात)
1967	बड़ौदा	(गुजरात)
1968	बोडेली	(गुजरात)
1969	पाटण	(गुजरात)
1970	बम्बई भायखला	(महाराष्ट्र)
9171	बड़ौदा	(गुजरात)
1972	बोडेली	(गुजरात)
1973	शिवपुरी	(म-प्र)
1974	दिल्ली	(दिल्ली)
1975	लुधियाना	(पंजाब)
1976	होशियारपुर	(पंजाब)
1977	आगरा	(यू-पी)
1978	अम्बाला	(हरियाणा)
1979	बीकानेर	(राजस्थान)
1980	बिजोवा	(राजस्थान)
1981	सादड़ी	(राजस्थान)
1982	पालनपुर	(गुजरात)
1983	अहमदाबाद	(गुजरात)
1984	बम्बई वालकेश्वर	(महाराष्ट्र)
1985	बम्बई भायखला	(महाराष्ट्र)
1986	अकोला	(महाराष्ट्र)
1987	बड़ौदा	(गुजरात)
1988	हस्तिनापुर	(यू-पी)
1989	लुधियाना	(पंजाब)

"जो अपना कर्तव्य करने से चूकता है, वह एक महान लाभ से स्वयं को वंचित रखता है।"